

कर दीजिए। and Shri John F. Fernandes.  
मालती शर्मा जी नहीं है। जान फर्नांडिस जी जल्दी से

We have already delayed by  
half an hour.

#### **Sexual Exploitation of Minor Children by Foreign Tourists**

SHRI JOHN. F. FERNANDES (Goa):  
Madam, this is also a very serious matter, just  
like what Mr. Malkani has raised. Of late,  
India has been depicted as an  
international tourism destination. We  
welcome foreign tourists as our honoured  
guests because they come to our country to  
see our high traditions, ancient culture and  
rich heritage. But, of late, the focus from  
South-East Asia has been shifted to South  
Asia and India, and India is being sold abroad  
by the tourism industry and hotel industry,  
both here and abroad, as a sex-tourism  
destination. And our laws are so weak that  
the Government is totally apathetic towards  
it. It is high time that the Government of  
India rose to the occasion and did something  
about it.

Madam, the coastal States of Maharashtra,  
Goa, Karnataka, Kerala and Pondicherry are  
facing this problem. We see that in the  
western countries, having sexual contact with  
a person below 18 years of age is considered  
as mandatory rape. But in our newspapers we  
read, and there are reports from the United  
Nations, that we have the highest percentage  
of child prostitution in the world. Poor  
children are smuggled across the border from  
Nepal and Bangladesh. It is a matter of great  
shame for our country. We say that we have  
high traditions, high values of heritage and  
culture and morals, but the Government is  
very silent about it.

There is a campaign, off and on, in the  
magazines and newspapers, aided and abetted  
by our own tourism and hotel industries, and  
chartered flights with tourists are brought into  
the country. And our Ministers go abroad.  
Recently, our Chief Minister and Deputy  
Chief Minister went abroad with a 14-  
member

delegation. They are doing nothing for the  
country and for the law of the country. They  
are selling our country for a song. Dollars are  
most welcome, but what is the Government  
doing?

Madam, at the beginning of this century  
there was dumping of opium by certain  
countries in other countries to degenerate  
those countries. Something similar is  
happening now. They are importing AIDS  
from developed foreign countries—I am  
talking of AIDS, not foreign aid—and this  
country is being destroyed totally by these  
vices.

We see in the papers that even minors and  
infants are not spared. Recently France has  
amended its law and said that any sexual  
contact with an infant or minor would attract  
death penalty. Therefore, I request the  
Government to see that our laws are amended.  
And we should amend our laws with a view  
to see that the offenders, the foreigners, who  
go back to their own countries could be  
extradited and brought to this country and  
punished. Madam, I request the Central  
Government to come forth with a suitable  
legislation in this regard.

Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House  
is adjourned till 2.30 p.m. for lunch.

The House then adjourned-for  
lunch at thirty minutes past one  
of the clock.

The House reassembled after lunch at  
thirty-four minutes past two of the clock, The  
Vice-Chairman (Miss Saroj Khaparde) in the  
Chair.

#### **THE MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA BILL, 1995**

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ  
KHAPARDE): We will take up the Mahatma  
Gandhi Antarrashtriya Hindi  
Vishwavidyalaya Bill, 1995.

Mr. Minister.

THE MINISTER OF HUMAN  
RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI S. R.  
BOMMAI): Madam, I beg to move:

That the Bill to establish and incorporate a  
teaching University for the promotion and  
development of Hindi language and  
literature, through teaching and research,  
with a view to enabling Hindi to achieve  
greater functional efficiency and  
recognition as a major international  
language and to provide for matters  
connected therewith or incidental thereto,  
be taken into consideration.

Madam, this is a Bill to give a higher stature to  
Hindi to make it possibly an international  
language just as English.

श्री नवा सिंह (बिहार): मैडम, मंत्री जी  
कम-से-कम बिल तो हिंदी में पेश करें।

श्री एच० हनुमन्तप्पा (कर्नाटक): मैडम, हिंदी के  
बिल पर हिंदी में बोलना चाहिए।

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ  
KHAPARDE): Do you want the Minister to  
speak in Hindi?

श्री श्री० नारायणसायी (पंजाब): मैडम, उन के  
सब श्री टी० अर० बालू मंत्री हैं। वह हिंदी का अपोज  
कर रहे हैं और मंत्रीमण्डल में हैं।

THE MINISTER OF STATE IN THE  
MINISTRY OF PETROLEUM AND  
NATURAL GAS (SHRI T. R. BALLU):  
Madam, on a point of clarification. We are not  
against Hindi.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS  
SAROJ KHAPARDE): Mr.  
Narayanasamy is saying that the Minister is  
going to promote Hindi through this University  
and he should pilot this Bill in Hindi.  
...(Interruptions)... Please listen Mr.  
Narayanasamy also said that the Minister should  
say something in Hindi. I was about to say that  
charity begins at home. But the Minister himself  
started piloting the Bill in English. Now, what is  
your point of order?

SHRI T. R. BAALU: Madam, the DMK  
party is not against Hindi but it is against Hindi  
imperialism.

श्री श्री० नारायणसायी: वे तमिलनाडु में लोगों का  
हिंदी पढ़ना बंद कर रहे हैं और उन का बेटा-बेटी हिंदी  
पढ़ रहा हूँ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरदे): उन का  
बेटा-बेटी हिंदी पढ़ रहा हूँ नहीं, उन के बेटा-बेटी हिंदी  
पढ़ रहे हैं।

श्री विष्णु कान्त झास्त्री (उत्तर प्रदेश): मैडम,  
बोम्बई जी बहुत अच्छी हिंदी जानते हैं और वह मेरे साथ  
हिंदी में बात भी करते हैं। मैं चाहूंगा कि वह जितनी  
हिंदी जानते हैं, उतनी हिंदी बोलें।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरदे): मंत्री जी,  
शास्त्री जी का एक सुझाव आया है और मुझे भी लगता  
है कि यह एक बहुत अच्छा और योग्य विचार रखा है  
कि जब मंत्री जी स्वयं इस यूनिवर्सिटी के माध्यम से हिंदी  
प्रमोट करने जा रहे हैं और आप मंत्री जी के रूप में  
नहीं, लेकिन मित्र के रूप में शास्त्री जी के साथ अक्सर  
हिंदी में वार्तालाप करते हैं तो आप अगर हिंदी में कुछ  
बोलें तो उचित रहेगा।

श्री खेयप्पा आर० बोम्बई: मैडम, यह बिल इस  
लिए लया गया है ताकि हिंदी को अन्तर्राष्ट्रीय स्थान मिले  
और हिंदी में और ज्यादा रिसर्च व भाषान्तर हो। मैडम,  
हिंदी का एक विश्वविद्यालय हम गांधी जी के नाम से  
वर्धा में स्थापित करने वाले हैं। इस का कारण यह है  
कि गांधी जी ने सब को हिंदी सिखाने के लिए और इसे  
गठ्ठापा बनाने के लिए बहुत कोशिश की। मैडम, हमारे  
समय में कर्नाटक में हम स्कूल में हिन्दी पढ़ते थे और  
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का तमिलनाडु में  
हेडक्वार्टर था। मुझे मालूम नहीं कुछ हुआ और आजदी  
के बाद हिंदी विरोध इसलिए आया जैसा कि अभी मेरे  
कलीग ने बताया कि कुछ दोस्तों ने हिंदी इम्पोज करने  
की कोशिश की। इसलिए उस का रिएक्शन तो हुआ।  
अब इस विश्वविद्यालय की स्थापना से हिंदी का मान  
बढ़ेगा और उसे बहुत उन्नत स्थान मिलेगा। हिंदी में ऐसे  
मंडित आएंगे, विदेश से लोग आएंगे और यह  
जोडेंसिपल यूनिवर्सिटी हो जाएगी। वहाँ विदेश से लोग  
आएंगे और हिंदी में ज्यादा प्रवीण लोग मिलेंगे। इस की  
व्यवस्था सरकार कर रही है।

मैडम, यह मामला बहुत दिनों से चल रहा था। इस  
बारे में डिमांड थी और 75वें इंडपेंडेंस डे हिंदी  
कॉन्फरेस ने यह निर्णय लिया था। उस दिन से वह मंग

है। इसलिए सरकार इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए बहुत अतुर है और जल्दी ही यह विश्वविद्यालय अस्तित्व में आएगा।

With these few words, I commend the Bill for approval.

*The question was proposed.*

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरडे):** बहुत बहुत मुबारकवाद, आपने बहुत अच्छा बिल हिंदी में पेश किया।

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** हिंदी विश्वविद्यालय की सारी चर्चा भी अगर हिंदी में हो तो बहुत अच्छा होगा।

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरडे):** ठीक है, मुझे कोई एतराज नहीं है। अगर हमारे सारे माननीय सदस्य हिंदी में ही बोलना चाहें और हिंदी में ही चर्चा करना चाहें तो इससे अच्छी बात और क्या होगी। ... (व्यवधान)

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** जब हम हिंदी को यह सम्मान देना चाहते हैं, हिंदी को बढ़ाना चाहते हैं तो हमारी चर्चा भी इस पर हिंदी में होनी चाहिए।

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरडे):** बिल्कुल होना चाहिए।

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Let charity begin at home.

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापरडे):** बिल्कुल ठीक है।

मैं सामने इस बिल पर बोलने के लिए जिन माननीय सदस्यों के नाम हैं, उनको मैं निवेदन करूंगी कि वे अपने विचारों को यहां तक हो सके, यहां तक बन सके, हिंदी में सदन के सामने रखें।

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री:** माननीय उपाध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी ने जो विधेयक हमारे सामने रखा है उसे उसका स्वागत करता हूँ। मैं अपनी पार्टी की ओर से उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ, लेकिन समर्थन के साथ-साथ कुछ शंकाएं भी मन में उठती हैं और मैं कुछ परामर्श भी देना चाहता हूँ। मेरा निवेदन है कि माननीय मंत्री जी उन शंकाओं का निराकरण करेंगे और अगर वे परामर्शों को वह इस योग्य समझेंगे कि उन्हें अक्षय्य बनाया जाए तो उसमें अक्षय्य करने की क्षमता भी मिलेगी।

माननीय, पहली बात तो यह है कि भारत सरकार के लंबे आचार्य के कारण मन में एक शंका उत्पन्न होती है

कि कहने के लिए जो बात कही जाती है वह अक्सर की नहीं जाती। कथनी और करनी में इतना बड़ा अंतर और खासकर हिंदी के संबंध में, जिससे कि बहुत खेदा होती है। अब इसका एक छोटा सा उदाहरण, वर्ष 1975 ईस्वी में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में यह संकल्प लिया गया, तो जो संकल्प 1975 में लिया गया उसके लिए यह विधेयक, 1996 के अंत में आया यानी एक संकल्प को विधेयक के रूप में क्रियान्वित करने के प्रयास में अगर 21 साल लगे हैं तो रामजाने इसकी वास्तविक स्थापना और उसके क्रियान्वयन में कितना लंबा समय लगेगा। मैं माननीय मंत्री जी से यह आश्वासन चाहूंगा कि इस विधेयक के पारित होने के बाद वह तत्काल समयबद्ध दृष्टि से, समयबद्ध योजना के अनुसार इसको क्रियान्वित करेंगे।

माननीया, दूसरी बात यह कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्य में यह बात कही गई है कि हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में महत्व प्राप्त हो। यह इसका उद्देश्य है। माननीय सैकिया जी बैठे हैं, उनके पहले माननीया सैतजा जी थीं, उन्होंने जो उत्तर दिया, उसमें साफ लिखा है कि इस विधेयक का उद्देश्य है — "...to achieve greater functional efficiency and recognition as a major international language..."

कि भारत की इस राजभाषा हिंदी को प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकृति प्राप्त हो और तत्काल कामकाज हिंदी में हो सके, इसके लिए इस विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि यह उद्देश्य जितना शुभ है, क्या व्यवहार उसको पृष्ठ करता है? क्या भारत सरकार के प्रधान मंत्रियों ने, विदेश मंत्रियों ने कोई प्रमाण दिया है इस दिशा में? माननीय अटल बिहारी वाजपेयी पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में बोले, उनके बाद माननीय चन्द्रशेखर जी बोले। केवल दो ही बार संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी बोली गई। कोई दूसरा प्रधान मंत्री या विदेश मंत्री हिंदी में नहीं बोला। मैं गंभीर रूप से शंका प्रकट करता हूँ कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण भाषा की स्वीकृति का क्या यही रूप है?

इससे नीचे उतरकर आए तो सारी दुनिया के जितने देश हैं, उनके राजदूतवासों में उनकी भाषा में काम होता है या जिस देश में राजदूतावास स्थापित होते हैं, उस देश की भाषा का भी इस्तेमाल किया जाता है। हमारे देश के राजदूतावासों का क्या हाल है? सौभाग्य से कहीं व दुर्भाग्य से कहीं, पिछले वर्ष मुझे कुछ राजदूतवासों को देखने का मौका मिला। माननीया, मैं आपको सब का सब

हूँ कि वहाँ बड़ी हृदय-विदारक स्थिति है। मेरे मित्र वहाँ मौजूद नहीं हैं, हम लोग जब अमरीका गए तो वहाँ के तत्कालीन राजदूत ने हमसे कहा कि हम हिंदी में क्यों काम करें? भारत की तो 21 राजभाषाएँ हैं। वे बहुत बड़े कानून के विशेषज्ञ हैं। मैंने उनसे प्रार्थना की कि ऐसा नहीं है, वहाँ की प्रधान राजभाषा हिंदी है, सम्बद्ध राजभाषा अंग्रेजी है, अन्य भारतीय राजभाषाएँ सम्मानित हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि यह बात नहीं है। उन्होंने संविधान मंगाया, संविधान उल्ट-पुल्टकर देखा और तब स्वीकार किया कि हिंदी हमारी राजभाषा है। उस समय हमारे साथ श्री पी० एम० सईद साहब और ईश दत्त आदय भी थे। वे वहाँ होते तो इसकी पुष्टि करते।

महोदया, जब राजदूतों की यह स्थिति है तो आप समझ सकते हैं कि राजदूतावासों का क्या हाल होगा। राजदूतावासों में कहीं भी हिंदी का टाइपराइटर नहीं है, हिंदी का कंप्यूटर नहीं है, कहीं हिंदी में कामकाज नहीं होता, हिंदी में पत्राचार नहीं होता। वहाँ हिंदी बोली नहीं जाती। तब कैसे यह विश्वास कर लिया जाए कि भारत सरकार सचमुच में हिंदी को एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने का संकल्प लेकर काम कर रही है?

महोदया, इस बिल के उद्देश्यों में यह भी उद्घृत किया गया है कि विदेशों में लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। यह गौरव की बात है लेकिन उन 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाने वालों की मानसिकता क्या है, क्या इसकी ओर कभी भारत सरकार ने ध्यान दिया है? क्या भारत सरकार के उच्च अधिकारी इसको जानते हैं? मेरा सौभाग्य है कि मैं कई विश्वविद्यालयों में गया हूँ। जर्मनी के सबसे पुराने विश्वविद्यालय, हैडलबर्ग विश्वविद्यालय में मैं गया हूँ। वहाँ हिंदी विभाग की अध्यक्ष डा० मोनिका ने तत्कालीन गृह राज्य मंत्री श्री पी० एम० सईद से पूछा कि आप मुझे बताइए क्या मैं अपने 70 जर्मन विद्यार्थियों का भविष्य नष्ट करने के लिए उन्हें हिंदी पढ़ा रही हूँ? सईद साहब चुप रह गए, कोई उत्तर देते नहीं बना। उन्होंने पूछा कि आप ऐसा क्यों

कहती है तो उन्होंने बताया कि जर्मनी में जितने भारतीय उपग्रह हैं—चाहे राजदूतावास हो, चाहे वाणिज्यिक संस्थान हों, चाहे बैंक हों या दूसरे व्यापारिक संस्थान हों, कहीं भी लोग हिंदी में बात नहीं करते हैं, कहीं कोई काम हिंदी में नहीं होता है। यही नहीं, डा० मोनिका ने यह भी कहा कि जब मैं दिल्ली गई तो मैं हिंदी में बोलती थी लेकिन दिल्ली में उच्च अधिकारी मुझ से अंग्रेजी में बात करते थे। तो यह स्थिति है हिंदी की कि विदेशी व्यक्ति तो हिंदी में बोल रहा है लेकिन भारतीय

व्यक्ति अंग्रेजी में जवाब दे रहा है। इसलिए डा० मोनिका ने बड़ा तर्कसंगत सवाल पूछा कि मैं अपने 70 विद्यार्थियों का भविष्य क्यों नष्ट करूँ? हम लोग इसका कोई सार्थक उत्तर नहीं दे सके और केवल लीपापोती करके चले आए।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हम लोग मास्को गए थे और वहाँ के राजदूतावास में हमारे सम्मान में एक भोज दिया गया। वहाँ हिंदी की एक अध्यापिका डा० ल्युडमिला पधारी। उन्होंने पूछा कि शास्त्री जी, बताइए मैं कैसी हिंदी बोलूँ? मैंने पूछा कि कैसी हिंदी बोलने का क्या मतलब? वह बोली शास्त्री जी, मैं जब आपके राजदूतावास में जाकर बोलती हूँ—अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, तो लोग मुझ पर हँसते हैं। वह कहते हैं कि शैड्यूल्ड कास्ट बोलो, शैड्यूल्ड ट्राइब्स बोलो। यानि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति शब्द हमारे राजदूतावासों के अधिकारियों को समझ में नहीं आता। उन्होंने बहुत ही पीड़ा के साथ एक और बात कही, मैं यह सदन में रखना चाहता हूँ। उन्होंने बताया कि पहले जब देश से विद्वान आते थे उनसे बात करके मुझे आनन्द मिलता था हिंदी में। अब जो आपके देश से आते हैं सब नव-धनाध्य आते हैं, वह वहाँ व्यापार करने के लिए आते हैं। रूस के लोगों को अंग्रेजी उतनी नहीं आती। तो उन्हें दुभाषिया मेरे विभाग से जाता है। मेरे विभाग का विद्यार्थी जब उनसे हिंदी में बात करता है तो कहते हैं कि तुम किस भाषा में बोलो। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हुए यानी कर्ता, करक, विभक्ति और सर्वनाम, क्रिया यह तो हिंदी के और सारे शब्द अंग्रेजी के, तब उनको समझ में आता है। उन्होंने कहा कि यह भी हिंदी के। डा० ल्युडमिला ने मुझसे पूछा कि 50 साल की आजादी का मतलब है कि भारतीय भाषा अंग्रेजी की गुलामी करती रहें और तब मुझको लगता है कि डा० ल्युडमिला जो कह रही है कितना सच है। मैं आपसे सच कहता हूँ कि माननीय शिक्षा मंत्री जो हमारे देश में शिक्षा के द्वारा न केवल हिंदी बल्कि प्रत्येक भारतीय भाषा की जड़ में मट्टा डाला जा रहा है। मैं आपसे आग्रहपूर्वक कहता हूँ। मैं तो जानता हूँ कि नव धनाध्य हिंदी बच्चे 56 नहीं जानते फिफ्टी सिक्स जानते हैं, शुकवार नहीं जानते फ्राइडे जानते हैं। लेकिन मेरा विश्वास है कि कन्नड़ बच्चे भी नहीं जानते, तमिल बच्चे भी नहीं जानते, गुजराती बच्चे भी नहीं जानते, मराठी बच्चे भी नहीं जानते। जिन-जिन प्रदेशों में केवल प्रतिष्ठा बिन्दु के रूप में अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को शिक्षा शुरू की गई—दूध पीते बच्चे, उनको हिंदी की गिनती नहीं आती, उनको निश्चय ही क्रन्ड की गिनती भी नहीं

आते होंगे। मैं जानता हूँ कि बंगला के शब्द भी नहीं आते। मैं बंगाली मित्रों से चुनौती देकर कहता हूँ कि हुम, खिन्ना नाथ टैगोर का नाम लेते हो, तुम्हारी नई पीढ़ी क्या कर रही है। बंगाली बच्चे केवल जो अंग्रेजी में पढ़ते हैं वे 56 नहीं जानते, 36 नहीं जानते। 36 जाने न, 56 जाने न, थर्टी सिक्स, फिफ्टी सिक्स बोलते हैं। यह जो स्थिति है उसके लिए कौन उत्तरदायी है। भारत की भाषा भारत में उपेक्षित है। हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ सब भाषाओं पर अंग्रेजी का एक छत्र राज है। इस अंग्रेजी के एक छत्र राज को चुनौती देने की मानसिकता अगर हमारे देश में पैदा नहीं हुई तो हमारी संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती। इसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व माननीय शिक्षा मंत्री जी आपके कंधों पर है। आपके विभाग में उन तमाम शिक्षा संस्थानों को सचेत किया जाना चाहिए जो कि बच्चों को माँ के दूध के साथ विदेशी भाषा सिखाने में गौरव का अनुभव करते हैं, जिन संस्थानों में टाई पढ़ने बिना कोई बच्चा पढ़ने नहीं जा सकता, चाहे लड़का हो, चाहे लड़की हो, तो किस भारतीय संस्कृति की बात हम करते हैं, किन भारतीय भाषाओं की बात हम करते हैं। इसमें हिन्दी का सवाल नहीं है, तमाम भारतीय भाषाएँ खतरे में हैं और जितना भी आपसे कहते हैं कि भूमण्डलीकरण के नाम पर जितनी मात्रा में बड़ी विदेशी कम्पनियाँ आएंगी उन विदेशी कम्पनियों में भारी वेतन के लोग आएंगे उतनी मात्रा में। हमारे मध्यम वर्ग, उच्च वर्ग के लोगों को अपनी भाषाओं का ज्ञान शून्य हो जाएगा।

**उपाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें):** सशस्त्री जी, मैं सिर्फ समय की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूँगी।

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री:** मैं इस विषय के ऊपर लौटकर आता हूँ।

**उपाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें):** आपकी पार्टी के लिए सिर्फ 11 मिनट का समय दिया हुआ है और शुरू से ही थोड़ा आज मुझे स्टिक्ट रहना होगा टाईम के बारे में, नहीं, तो हमारा कोई बिजनेस समाप्त नहीं होगा।

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री:** मैं दो मिनट में समाप्त करता हूँ। इसलिए माननीय शिक्षा मंत्री जी, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि केवल विषेयक उपस्थित करके नहीं, कोई सक्रिय कदम उठाया जाए। मुझे तो भय है कि महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का सारा काम अंग्रेजी में होगा। अभी मेरे मित्र हनुमन्तप्पा जी ने कहा कि यहाँ हम सब हिन्दी में बात करें, आपने इसमें कोई ऐसा उपबंध नहीं जोड़ा है कि विश्वविद्यालय का सारा काम हिन्दी में होगा। मैं आपको चुनौती देकर

कहना चाहता हूँ कि महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय का सारा काम अंग्रेजी में होगा जैसा कि और तमाम विश्वविद्यालयों के काम अंग्रेजी में होते हैं। आप कम से कम यह उपबंध तो जोड़ें कि इस विश्वविद्यालय का सारा काम हिन्दी में होगा। मैं आपसे दूसरी बात... (छद्मध्यान)

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** उस आश्वासन के बाद ही हम पास करेंगे।

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री:** मैं एक दूसरी बात आपसे पूछना चाहता हूँ और यह कहना चाहता हूँ। मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस विश्वविद्यालय को हम एक सामान्य विश्वविद्यालय का कोई दूसरा ढाँचा न बना लें। एक बड़े उद्देश्य को लेकर, एक बड़े कार्य को सामने रखकर यह विश्वविद्यालय स्थापित किया जा रहा है। इसलिए मुझे लगता है कि इस संबंध में दो-तीन बातें और जोड़ी जानी चाहिए। पहली बात इसमें जो प्रकार्यात्मक प्रभावशीलता की बात कही गई है वह प्रकार्यात्मक प्रभावशीलता प्रशासन में हिन्दी में कैसे आये इस पर बल दिया जाना चाहिए। वह इसमें जोड़ा नहीं गया है इसको इसमें जोड़ा जाना चाहिए।

इसमें अनुवाद की बात कही गई है, तुलना की बात कही गई है, संस्कृति की बात कही गई है, मैं इसका स्वागत करता हूँ। लेकिन भारत सरकार के प्रशासन में हिन्दी कैसे आये, प्रशासकों को हिन्दी में काम करने की शिक्षा कैसे दी जाये इसकी एक विद्या इसमें आनी चाहिए। मैं एक दूसरी विद्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि भिन्न-भिन्न विषयों में, जो अन्य विषय हैं हिन्दी के अतिरिक्त, उनके पाठ्य ग्रन्थ कैसे बने इसकी भी कोई चिन्ता या इसकी भी कोई चर्चा इस विश्वविद्यालय में होनी चाहिए। इसका कोई ध्यान इस विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में नहीं दिख रहा है।

मैं एक बात और जोड़ना चाहता हूँ कि अपने देश में और विदेशों में भी हिन्दी की सेवा में बड़ी संस्थाएँ, प्रमाणिक संस्थाएँ काम कर रही हैं। जिस बड़ी संस्था का नाम आपने लिया दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का, उसके लिए मेरा मन्त्रिस्तुतुत से शुकता है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा और दूसरी बहुत सी संस्थाएँ हैं, उन सब की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप किए बिना देश की और विदेश की हिन्दी सेवा संस्थाओं का एक सामान्य मंच यह विश्वविद्यालय बन सके, उनको जोड़ सके, उनके साथ वैचारिक आदान-प्रदान कर सके, इसका भी एक काम इसमें किया जाना चाहिए। समय

कम था। आपने मुझे अपनी बात कहने के लिए अवसर दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

मैं एक आश्वासन मंत्री जी आपसे अवश्य चाहता हूँ कि आप बताएं कि क्या समयबद्ध योजना है? इसके अन्तर्गत हम पारित करेंगे तो इसके बाद कितने दिनों में आप कर लेंगे, कितने दिनों में उसके कुलपति और उप कुलपति की नियुक्ति करेंगे और कब से काम शुरू होगा?

मैं पूरी श्रद्धा के साथ इस विधेयक का समर्थन करता हूँ, लेकिन माननीय मंत्री जी से अपेक्षा करता हूँ कि मेरे सुझावों पर अवश्य ध्यान देंगे। नमस्कार।

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें):** शास्त्री जी, बहुत-बहुत धन्यवाद। आप बहुत अच्छा बोल रहे थे लेकिन समय की कमी होने की वजह से मुझे आपको कहना पड़ा। अदरकद्वारा मैं जरूर आपको ज्यादा समय देती।

**डा० एम० अरम (नाम निर्देशित):** महोदया, मैं हिन्दी में बोलना चाहता हूँ लेकिन थोड़ी मुश्किल है।

May I have your permission to speak in English?

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें):** नहीं, आप हिन्दी में ही बोलिए, आपने शुरुआत बहुत अच्छी की है।

**डा० एम० अरम (नाम निर्देशित):** देखिए कम्प्यूटरीसिब आसान है लेकिन एक्सप्रेसन थोड़ा मुश्किल है। मैं अंग्रेजी में बोलता हूँ।

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें):** डा० अरम पहले आप हिन्दी में थोड़ा बोलिए और बाद में अंग्रेजी में बोलिए, कोई फर्क नहीं पड़ता है।

DR. M. ARAM: Madam, I am grateful to you for giving me this opportunity to speak on the Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya Bill. I warmly support this Bill. Yesterday, this hon. House passed the Maulana Azad National Urdu University Bill. These two universities together will be the most significant addition to the Indian University system which is one of the largest networks of higher education institutions in the world with a total of 224 universities including Central universities, State universities and deemed universities. The Mahatma

Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya will be the fulfilment of a dream and an idea which was born 21 years ago at the first Vishwa Hindi Sammelen held in Nagpur in 1975. This proposal was reiterated in the second Vishwa Hindi Sammelen held in 1976 in Mauritius. 3.00 P.M.

The third Vishwa Hindu Sammelen held in Delhi in 1983, further requested the Government of India to establish an international Hindi university. The then Prime Minister, Smt. Indira Gandhi, accepted the idea in principle and asked the Education Ministry to examine the matter. At that time, according to the classical concept of universities, the UGC felt that it should be a multi-disciplinary setup and a single discipline in a university may not be desirable. However, on further examination, later on in 1992, the UGC took a positive view, thus a Hindi university was recommended by the UGC. Why this change of attitude? The hon. Minister has already explained the significance of the need for this kind of a university. Hindi is our national and official language under Article 343 of the Constitution. For Hindi to have an international status, the emergence of such international Hindi university is certainly a valid reason. To further concretise this proposal, in the year 1993, an expert committee, with Dr. Shiv Mangat Singh Suman as Chairman, was constituted and it prepared a detailed scheme and presented it to the Education Ministry. Subsequently, the present Bill was prepared based upon that report. Madam Chairperson, the Parliamentary Standing Committee on Human Resource Development has gone into this Bill in depth, in great detail, and has submitted a comprehensive report to Parliament. It is not necessary for me to repeat the points made in the report. But may I highlight one or two salient points made by the Standing Committee? As regards the question whether the existing Hindi institutions in the country could not serve

the intended purpose, the answer is a clear no. A new university is necessary because it will have a new international thrust and it will also play a national coordinating role. For a considerable number of Hindi-speaking people scattered all round the globe, in far-flung countries like Fiji, Surinam, Mauritius, Trinidad, Guyana and others, a new university will be a focal point for fruitful exchange of scholars and teachers and fulfilment of a long-standing academic need and aspiration. Further the academic content of the university, the hon. Minister has pointed out, will have four dimensions. This university will have separate but inter-related institutes—four institutes: institute of language, institute of literature, institute of culture and institute of translation and interpretation. Further, this university will bear the hallowed name of the Father of the Nation who was a great protagonist of Hindi. The location in Wardha, further adds to the significance of the university. Madam Chairperson, the current year's Budget of the Education Department contains only a token provision of Rs. 1.55 crores. But this will have to be enhanced. I do hope, in the revised Budget, there will be a substantial increase.

At least, Rs. 10 crores should be provided to this university so that it can make a good start. During the 9th Plan, adequate provision should be made for the university. I understand, Rs. 30 crores will be provided. Whatever is needed should be provided. The UGC always complains that new universities are established, but adequate financial resources are not provided to the UGC.

Therefore, it is important for every new university that additional resources are made available from the UGC. Madam Chairperson, this Bill when enacted will lead to the emergence of a unique university bearing the name of the Father of the Nation, and it is most appropriate that this should happen in the fiftieth year of freedom. On August

15 th, 1947, that great day of the historic divide, Pandit Jawaharlal Nehru described that event, that occasion, saying that the soul of the nation long suppressed found its utterance. Madam, through this University as well as the Maulana Azad University the soul of India, Bharat Atma, will again speak. In this fiftieth year of freedom I consider it a privilege to support this Bill. Thank you.

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापड़ें): श्री रामदेव मंडारी। समय का ध्यान रखिएगा।**

**श्री राम देव मंडारी (बिहार):** मैं समय के अंदर ही अपनी बात समाप्त कर दूंगा। महोदया, मैं माननीय मंत्री श्री बोम्बई द्वारा सदन में फरण और विचार के लिए लाए गए इस महत्वपूर्ण विधेयक महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय विधेयक, 1995 का समर्थन और स्वागत करने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

महोदया, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम पर हिन्दी विश्वविद्यालय का नामकरण करके मंत्री जी ने इस देश की ओर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के प्रति एक और कृतज्ञता ज्ञापित करने का काम किया है। मैं मंत्री जी को इसके लिए भी बधाई और धन्यवाद देता हूँ।

महोदया, मंत्री जी अहिन्दी भाषी क्षेत्र से आते हैं और वे अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना का विधेयक लाए हैं, वह उनके हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम और राष्ट्रीय भावनात्मक एकता तथा भ्रवात्मक एकता की दिशा में बड़ा सराहनीय प्रयास है। यह विश्वविद्यालय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नाम पर स्थापित हो रहा है, इसलिए मैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा हिन्दी के प्रति व्यक्त उद्गार उद्धृत करना चाहूंगा। उन्होंने कहा था कि "यदि आप समूचे भारत की सेवा करना चाहते हैं, यदि आप इस विशाल देश के उत्तरी और दक्षिणी भागों में एकता स्थापित करना चाहते हैं तो आपके लिए हिन्दी सीखना अनिवार्य है।" उन्होंने यह भी कहा था कि मैं हिन्दी भाषा पर इतना जोर इसलिए देता हूँ क्योंकि राष्ट्रीय एकता हासिल करने के लिए यह एक बहुत ज़रूरी स्तंभ है और जितना दृढ़ इसका आधार होगा उतनी ही सख्त हमारी एकता होगी। उन्होंने कहा था कि अगर हम देशी भाषाओं को फिर से अपना लें और हिन्दी को उसके उपयुक्त स्थान पर, राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कर दें तो देश की इससे बड़ी सेवा कोई हो नहीं सकती। इतना ही नहीं, उन्होंने कहा था कि अगर ये हाथ में

तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए लड़के लड़कियों को शिक्षा देना बंद कर दूँ। ऐसा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जी ने कहा था कि यदि दक्षिण भारत को क्रियात्मक रूप से पूरे देश के साथ एक सूत्र में बंध कर रहना है और अखिल भारतीय मामलों में तत्संबंधी प्रश्नों से अपने को दूर नहीं रखना है तो उन्हें हिन्दी पढ़ना जरूरी है।

श्रीमो दयानन्द जी ने कहा था कि मेरी आंखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब देशवासी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक भाषा समझने और बोलने लग जायें। हिन्दी भाषा में इसके सब गुण मौजूद हैं। कुछ बातें हिन्दी के संबंध में अपने देश के महान नेताओं की हैं जो मैंने उद्धृत की हैं। महोदया, मैं कहना चाहता हूँ कि भाषा केवल व्यक्ति की ही नहीं, राष्ट्र की भी सब से बड़ी पहचान है। जिन मूलभूत तत्वों को ले कर कोई देश राष्ट्र कहलाता है उसमें राष्ट्र का कब कब संविधान, राष्ट्र का ध्वज, राष्ट्रगान के साथ-साथ राष्ट्रभाषा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा या जनभाषा तीनों के रूप में अत्यधिक महत्व रखती है। हिन्दी कोई विशेष क्षेत्र या समुदाय की भाषा नहीं हो कर के व्यापक जन संपर्क की भाषा है जिसे राष्ट्र की अधिकांश जनता जानती है, समझती है। इतना ही नहीं स्वाधीनता संग्राम के दौरान नेताओं ने हिन्दी को आंदोलन के हिस्से के रूप में बनाया था। मैं शास्त्री जी को सुन रहा था। शास्त्री जी विदेश गये थे। शास्त्री जी संसदीय राजभाषा समिति के सदस्य हैं और मैं भी हूँ, श्रीमती चन्द्रकला पाण्डेय जी भी उसकी सदस्या हैं। यह संसदीय राजभाषा समिति केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों का दौरा करती है, सार्वजनिक उपक्रमों और बैंकों का दौरा करती है और यह देखती है कि हिन्दी का प्रयोग कितनी दूर तक हो रहा है, हो रहा है या नहीं हो रहा है। मैं शास्त्री जी की भावना से सहमत हूँ कि हम अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा में खोलने जा रहे हैं जहां से गांधी जी का बहुत निकट और घनिष्ट संबंध रहा है। मगर हमारे देश में हिन्दी का जितना प्रयोग होना चाहिये, जो सम्मान मिलना चाहिये, वह सम्मान हम अपने देश में नहीं दे पाए हैं। शास्त्री जी तो विदेश की बात कर रहे थे। यहां जो केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हैं वह "क" क्षेत्र में पड़ते हैं, "क" क्षेत्र का मतलब होता है शत-प्रतिशत हिन्दी में काम होना मगर जब भी हम केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों में निरीक्षण के लिए जाते हैं तो बड़ा दुख होता है कि हिन्दी को राजभाषा मानने के लिए वह तैयार नहीं है, वह मानसिकता अभी पैदा नहीं हुई है उनमें कि हिन्दी

को राजभाषा, राष्ट्रभाषा, के रूप में स्वीकार करें। अंग्रेज़ तो यहां से चले गये लेकिन हमारे यहां अंग्रेज़ीबत अभी भी बाकी है। माननीय मंत्री जी ने अहिन्दी भाषी राज्य से आने के बाद भी महात्मा गांधी के नाम पर हिन्दी विश्वविद्यालय खोला है, यह बड़ा अच्छा काम किया है। इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ। मैं यह आशा करता हूँ कि इस विश्वविद्यालय के माध्यम से अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी को मान-सम्मान मिलेगा, हिन्दी का प्रचार-प्रसार होगा। मैं इस आशा और उम्मीद के साथ माननीय मंत्री जी के माध्यम से सरकार से कहना चाहूंगा कि राष्ट्रपति जी को जो पांच प्रतिवेदन संपर्पित किये गये हैं जिनमें से चार पर राष्ट्रपति जी के हस्ताक्षर हो चुके हैं, राष्ट्रपति जी के मान, सम्मान और गौरव को बढ़ाने के लिए हमारा दायित्व हो जाता है कि उन्होंने जो आदेश हमें हिन्दी राजभाषा के संबंध में दिये हैं, उन्हें लागू करें। यह मैं मंत्री जी के माध्यम से अपनी सरकार से कहना चाहता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

सैयद सिद्दो रज़्ज़ी (उत्तर प्रदेश): माननीया महोदया, आज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के संबंध में विधेयक पर चर्चा कर रहे हैं। मैं बधाई देना चाहता हूँ माननीय मंत्री जी को कि उन्होंने एक अधूरे काम को पूरा किया है और इस सब की जो अभिलाषा थी, कामना थी उसकी सम्पूर्ति होते हुए दिखाई देती है। मैं अभी अपने योग्य साथियों, संसद सदस्यों को सुन रहा था। निश्चित रूप से हम सब की चिन्ता इस बात से जुड़ी हुई है कि स्वतंत्रता के 50 वर्षों के बाद भी अभी राष्ट्र गूंगा है। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर जब हम विदेशी भाषा का सहारा ले कर बातचीत करते हैं तो ऐसा लगता है कि हमारी अपनी कोई भाषा नहीं है।

और अभी भी हम लादी हुई और थोपी हुई भाषा का ही प्रयोग करके अपना ध्येय, अपना उद्देश्य दूसरों के सामने रखते हैं। गांधी जी का नाम आया और गांधी जी के नाम से इस विश्वविद्यालय का नामकरण किया गया है। गांधी जी ने इस बात को कई भरतबे कहा था कि भारत की लड़ाई की जो मुख्य धारा से जुड़ी हुई भाषा रही है वह हिन्दी रही है और स्वतंत्रता के बाद भी शायद अभी हिन्दी को वह स्थान नहीं मिला है जो मिलना चाहिए था। उसके बहुत सारे कारण हैं, बहुत सारे वजुहात हैं। लेकिन जो मुख्य कारण नजर आता है वह यह है कि हमने नेकनीयती से प्रयास नहीं किया कि हिन्दी को हम इतना सुदृढ़ बना सकें, शक्तिशाली बना सकें कि हमारे विश्वविद्यालयों में केवल हिन्दी साहित्य के लिए ही नहीं बल्कि और जो हमारे विषय हैं, हमारे सब्जेक्ट्स हैं, मजामीन हैं, इंजीनियरिंग है, हमारा आधुनिक जो विज्ञान



है और बहुत सारे जो हमारे पेशे से जुड़े टेक्निकल सम्बन्ध हैं उनमें हम हिंदी में पठन पाठन कर सकें। उसकी वजह यह है और हमें यह मानना पड़ेगा कि अभी भी संवर्धन शक्ति हिंदी की वह नहीं बन पायी है। इसलिए निश्चित रूप से हिंदी संस्कृत की बेटी है, संस्कृत की कोख से इसका जन्म हुआ है लेकिन नये युग के लिहाज से जो आवरण हिंदी को धारण करना चाहिए था शब्दावली का, शब्दों का कोश जो उसका असीम सीमा तक सुव्यवस्थित करना चाहिए था वह हम नहीं कर सके हैं और आज भी हम अपने प्रदेश की बात करें या हिंदी भाषी प्रदेशों के अंदर बात करें तो जहां वे शब्द जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में रच बस गए हैं, हम कोशिश करते हैं कि उनका भी हम अनुवाद करें बजाए इसके कि हम इंजीनियरिंग और डाक्टरी के जो सम्बन्ध हैं उनमें हिंदी के लिए कोशिश करें कि कैसे उनको बदलें अपनी भाषा के अंदर हम उन शब्दों को जो रोजमर्रा की जिंदगी में बोले जाते हैं उनको बदलने के पीछे पड़ गए हैं। यदि इंजीनियर है तो उसका अधिशासी अभियंता नाम होगा। अस्पताल है तो उसका नाम बदलकर कुछ और कर देंगे। आज जितनी हमारी माडर्न, आधुनिक भाषाएं हैं, अंतर्राष्ट्रीय जगत में अगर आप देखें तो आज जो परिचयन है वह परिचयन नहीं है जो 500 साल पहले था। आज यदि परिचयन को उसकी पुरानी लुगद से, उसकी पुरानी शब्दावली से देखें तो उसमें हजारों हजार शब्द ऐसे हैं जो फ्रेंच के आ गए हैं, जर्मनी के आ गए हैं, और दूसरी भाषाओं के आ गए हैं। उन्होंने उन शब्दों को अंगीकृत कर लिया है। तो मुख्य रूप से हमें ध्यान देना होगा कि हम कितना हिंदी से हटकर साधारण मनोवृत्ति रखने वाले व्यक्ति की हिंदी को भाषा बनाएं तब यह संभव हो पाएगा कि हम उसको एक गतिशील भाषा बना सकेंगे। आज हमें यह दुख होता है कि हम जब विदेश जाते हैं तो अपनी बातचीत करने के लिए हमारे पास अनुवादक नहीं होते, हमारे पास इन्टरप्रेटर्स नहीं होते। हमें खुशी है कि माननीय मंत्री जी ने इसके अन्दर जो क्लोजेज है उनमें मुख्य रूप से यह कहा है—आम्बेडकर आफ यूनिवर्सिटी में, जो उद्देश्य है इस यूनिवर्सिटी का—कि हम यह व्यवस्था करेंगे कि ट्रेनिंग हो ट्रांसलेशन और इन्टरप्रेटेशन के क्षेत्र में। हमें इसको देखना होगा, सम्यक् रूप से हमें इसको देखना होगा। आज जैसे कि अभी नयी आर्थिक नीति की बात होती है या विज्ञान में हमारे अनसंधान की बात होती है... (समय की घंटी) कि देशों से हमारा ज्ञान से ज्ञान सि मामले में सम्पर्क होता है। तो एक प्रायोरिटी बेसिस पर हमें उन देशों को आईडेंटिफाई करना चाहिए और उन जगहों को जहां हमारी रोजमर्रा उनसे बातचीत

चलेगी और चलती है उनको प्रायोरिटी देनी चाहिए ट्रांसलैटर्स और इन्टरप्रेटर्स के सिलसिले में।

अब मैं अपनी बात खत्म करना चाहूंगा क्योंकि आपने घंटी बजा दी है। यह बड़ा वृहद विषय है, इस पर देर तक चर्चा हो सकती है। आखिरी बात कहना चाहूंगा कि अभी हमने बड़े जोरदार तरीके से जो अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद है यूनाइटेड नेशंस है उसमें इस बात का मुद्दा बनाया क्योंकि हम सबसे बड़े, बाहुल्य लोकतांत्रिक देश हैं इसलिए हमें सिक्योरिटी कन्सिल में जगह मिलनी चाहिए। लेकिन क्यों नहीं हम इसी बात को लेकर चलते हैं कि चाइना के बाद सबसे ज्यादा बाहुल्य देश हमारा है, लोकतन्त्र से जुड़ा हुआ हमारा देश है। बहुत सारी भाषाएं हमारे यहां बोली जाती हैं लेकिन हमारे संविधान ने, हमारी संसद ने हमारी कांस्टिट्यूट असेम्बली ने जिस एक भाषा को अंगीकृत किया है वह हिंदी है। और हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय जगत में, यह जो हमारा यूनाइटेड नेशंस है, इसमें एक ऐसी भाषा की सूरत में लिया जाए कि वहां हमारा पूरा का पूरा कार्यक्रम हिंदी में होना चाहिए। यदि इसके लिए हम प्रयास करें, क्योंकि वहां जो 5-7 भाषाएं हैं व भाषाएं देशों के अन्दर जितनी ज्यादा बोली जाती हैं उसके आधार पर वहां-पर इनको मान्यता दी गई है, लेकिन जब यह 90-95 करोड़ और आगे आने वाली सदी के अन्दर 100 करोड़ का हमारा देश हो जाएगा तो निश्चित रूप से दुनिया की एक बहुत बड़ी आबादी का हम हिस्सा हैं और हमारी वह भाषा जिसे हम राष्ट्रीय भाषा कहते हैं उसे अंतर्राष्ट्रीय जगत में, यूनाइटेड नेशंस में, उसमें बात-चीत के सिलसिले में हमें रखना है। मैं शास्त्री जी से पूर्ण रूप से सहमत हूं कि विदेश में हमारे जो नेता जाते हैं उनको अपनी भाषाओं में से किसी भाषा को वरीयता देनी चाहिए और निश्चित रूप से जब वरीयता का प्रश्न आएगा तो वह राष्ट्रीय भाषा का होगा। हमने हिन्दी का जो नुकसान किया है उसे हमें सम्यक् तरीके से पूरा करने की कोशिश करनी होगी। मैं यह नहीं मानता कि दक्षिण के अन्दर कोई इस प्रकार की बात है कि जो साधारण जन है वह हिन्दी से इस तरह का क्लेश रखते हैं, द्रेष रखते हैं या दूरी रखते हैं। मुख्य रूप से सब से बड़ा नुकसान हमारा जो हुआ है यह यह है कि हमने भाषा को राजनीति के लिए प्रयोग किया है। निश्चित रूप से यदि वहां हमारा आदान-प्रदान ज्यादा हो और राजनीति के लिए हम उसका इस्तेमाल नहीं करें तो इससे हिन्दी को बढ़ावा मिलेगा। हिन्दी से कभी उर्दू को लड़ाया गया और कभी दक्षिण भारत के अन्दर हिन्दी और वहां की स्थानीय भाषाओं को लड़ाया गया।

اس سید سبط رضی اللہ عنہ پر دیش : مانینہ مہرودہ۔  
 آج مہاتما گاندھی انٹر انٹرنیشنل ہفتوی و شہو  
 و در حالیکہ اس مقام پر آئے سمجھنے میں  
 و درجے ایک پر جبر چار کچھ ہیں۔ میں بد حال  
 دینا چاہتا ہوں مانینہ ہفتوی جی کو انہوں  
 نے ایک ادھو دے کام کو پورا کیا ہے اور ہم سبکی  
 جو اہل شاعری۔ کامناقی اسکی سفید پوری  
 کرتے ہوئے دکھایا کرتی ہے۔ میں ابھی اپنے دو گ  
 ساقیوں۔ سنسودھیوں کو سن رہا تھا۔  
 نشوونوب سے ہم سب کی جنتا اس بات  
 سے جڑی ہو گیا ہے کہ سنو ہفتوی کے ورثوں  
 کے بعد بھی ابھی انٹر انٹرنیشنل ہفتوی  
 منج پر ہم وہ دیشی جاشا کا سہارا لیکر

بات حقیقت کرتے ہیں تو ایسا لگتا ہے کہ ہماری  
 اپنی کوئی بے مائتدیا نہیں ہے۔ ہمارا بھی ہوا اور  
 ہوئی اور صفوی ہوئی بے مائتدیا کا ہی پیر ہوگ  
 کر کے اپنا دھندلے۔ اپنے ادیش دوسروں کے  
 سامنے رکھتے ہیں۔ گاندھی جی کا نام آیا اور  
 گاندھی جی کے نام سے اس وعدہ والیہ کا نام لکرن لیا  
 گیا ہے۔ گاندھی جی نے اس بات کو کسی مرتبہ  
 کہا تھا کہ بھارت کے لوگوں کی جو مکھیہ ذہن  
 سے جڑی ہوئی بے مائتدیا ہی ہے وہ صفوی ہی  
 ہے اور سو سو سو تار کے بعد شاید بھی صفوی نہ  
 وہ استعفا نہیں ملے گا ہے جو ملنا چاہیے تھا۔  
 اسکے بہت سارے کارن ہیں بہت ساری  
 وجوہات ہیں لیکن جو مکھیہ کارن نظر آتا ہے  
 وہ یہ ہے کہ ہم نے نیک نیتی سے پیر یا اس نہیں  
 کیا کہ صفوی کو ہم اتنا سہو کرنا سکیں۔  
 خشکی شادی بنا سکیں۔ کہ ہمارے سہو  
 دہلیوں میں کیوں صفوی سہو کرنا کیلئے ہی  
 نہیں بلکہ اور جو ہمارے وعدہ ہیں۔ ہمارے  
 سہو کرنا ہیں۔ مضاف میں ہیں انجینئرنگ  
 ہیں۔ ہمارے آئور وریو کے جو وگیاں ہیں اور  
 بہت سارے جو ہمارے پیسے سے جڑے  
 ہوئے نیکیکل سہو کرنا ہیں (میں) ہم صفوی  
 میں بھٹن باھن کر سکیں۔ اسکی وجہ یہ ہے  
 اور ہمیں یہ ماننا پڑیگا کہ اسکی بھی سہو کرنا  
 شکی صفوی کی وہ نہیں بن پایا ہے۔ (سارے)

نشیبت روپ سے صفوی سنسکرت کی بھیج  
ہے۔ سنسکرت کی کوکھ سے اسکا جنم ہوا ہے  
لیکن نئے یوگ کے لحاظ سے جو آوری ہندی  
تو دھارن کرنا چاہیے تھا۔ مشہد اوی کا۔  
مشہدوں کا کوش جو اسکا اسیم سمپانک  
سیوجت کرنا چاہیے تھا۔ وہ ہم نہیں کر  
سکتے ہیں۔ آج بھی ہم اپنے پردیش کی بات  
کریں۔ یا صفوی عباسی پردیشوں کے اندر  
بات کریں تو جہاں وہ مشہد جو ہماری مدد  
کی زندگی میں رچ بس گئے ہیں۔ ہم کوشش  
کرتے ہیں کہ انکا بھی ہم انوراد کریں بجائے  
اسکے کہ ہم انجینئرنگ اور ڈاکٹری کے جو  
سبجیکٹ ہیں انہیں صفوی کیلئے کوشش  
کریں کہ کیسے انکو بدلیں اپنی عباسی کے اندر  
ہم ان مشہد کو جو ہم روزمرہ کی زندگی  
میں بوئے جاتے ہیں انکو بدلنے کے پیچھے  
پرگئے ہیں۔ یادی انجینئر ہے تو اسکا ادھشای  
اعینشانام ہوگا۔ اسپتال ہے تو اسکا نام  
بدل کر کچھ اور کر دیں گے۔ آج جتنی ہماری  
ماحولی آدھونک عباسی ہیں انتر  
راشٹریہ جگت میں اگر آپ دیکھیں تو  
آج جو پرشین ہے وہ پرشین نہیں ہے جو  
پانچ سو سال پہلے تھی۔ آج یادی پرشین  
تو اسکی پرانی لٹو ہے۔ اسکی پرانی مشہد  
وری سے دیکھیں تو اسکی پرانی مشہد

ایکھ بھیج جو فرینچ کے آگے ہے۔ اور  
دوسری عباسیوں کے آگے ہیں۔ انہوں نے  
ان مشہدوں کو انگلیکرت کر لیا ہے۔ تو  
مکے روپ سے ہمیں دھیان دینا ہوگا کہ  
ہم کلشٹ ہندی سے حدت کر سادھارن  
منورتی دیکھنے والے ویکتی کی صفوی تو  
عباشا بنا لیکن تب یہ سنہو ہو پائے گا  
کہ ہم اسکو ایک مٹی شیل عباسی بنا سکیں گے  
آج ہمیں یہ کہہ ہوتا ہے کہ جب ہم ویش جانے  
ہیں تو اپنی بات چیت کر سکیں گے ہمارے  
پاسن انورادک نہیں ہوتے۔ ہمارے پاس  
انٹرپرائس نہیں ہوتے ہیں۔ ہمیں خوشی  
ہے کہ ماننے منتری جی نے اسکے انورادکر  
ہیں انہیں مکھیہ روپ سے یہ کہا ہے۔ آبیگھن  
آف یونیورسٹی" میں۔ جو مقصد ہے اس  
یونیورسٹی کا۔ کہ ہم یہ ویو سقا کریں گے کہ  
ٹریننگ ہوٹر انسلین اور انٹرپرائسٹن  
کے چھتر میں۔ ہمیں اسکو دیکھنا ہوگا۔  
سے برو روپ سے ہمیں اسکو دیکھنا ہوگا  
آج جیسے کہ ابھی نئی ڈرھک نیتی کی بات  
ہوتی ہے یوگیان میں ہمارے انورادھان  
کی بات ہوتی ہے۔۔۔ وقت کی گھنٹی۔۔۔  
لکن دیشوں سے ہمارے انداز سے زیادہ اس  
سائلے میں سمپرک ہوتا ہے۔ تو ایک پرانی  
ہیں پر ہمیں ان دیشوں کو ایکٹو نہیٹھائی

کرنا چاہیے۔ اور ان زبانوں کو جہاں ہماری  
روزمرہ ایسے بات چیت چلیگی اور چلتی ہے  
انگریزی اور ہندی دینی چاہیے۔ ٹرانسلیٹریشن اور  
انٹریپرٹیشن کے سلسلہ میں۔

اب میں اپنی بات ختم کرنا چاہوں گا  
کیونکہ اپنے گفتنی بھادی ہے۔ یہ بڑا وعدہ  
عہدہ ہے۔ اس پر دیر تک چرچا ہو سکتی  
ہے۔ آخری بات کہنا چاہوں گا کہ اس میں ہم نے  
بڑے زوردار طریقے سے جو انٹرایکشن  
سرکٹس پریشوس ہے یونا یونیورسٹیشن ہے  
اس میں اس بات کا مدعا بنایا کہ وہ ہم سب  
سے بڑے باہولیہ نوک تانترک دیش ہیں۔

اس کے ہمیں سیکورٹی کو نسل میں جگہ ملنی  
چاہیے۔ لیکن کیوں نہیں ہم اس بات کو بیکر  
چلتے ہیں۔ کہ چائے کے بعد سب سے زیادہ  
باہولیہ دیش ہمارا ہے نوک تانترک سے بڑا  
ہمارا ہمارا دیش ہے۔ بہت ساری جماعتیں  
ہماری یہاں بولی جاتی ہیں۔ لیکن ہمارے  
سفودھان نے۔ ہماری سندھ نے ہمارے  
کا نسٹی ٹیوٹ (سمیٹی) جس ایک جماعت  
کو الیکٹ کرنا چاہیے وہ صفی ہے۔ اور صفی  
کو انٹرایکشن جگہ میں۔ یہ جو ہمارا  
یونا یونیورسٹیشن ہے۔ اس میں ایک ایسی  
جماعت کی صورت میں لیا جائے کہ وہاں  
ہمارا پورا کاپورا کالری کے گرم صفی میں  
ہونا چاہیے۔ یہی اسکے لئے ہم پر یاں کریں۔

کیونکہ وہاں پانچ سات جماعتیں ہیں وہ  
جماعتیں دیشوں کے اندر جتنی زیادہ  
بولی جاتی ہیں۔ اسکے آؤ ہاربر وہاں پر  
انکو مانٹادی گئی ہے۔ لیکن جب یہ نوک  
چھانوس کر وڈ اور بڑے ٹنڈل صفی کے  
انڈر وہ آؤ وڈ کا ہمارا دیش ہو جائیگا۔  
تو نشیپت روپ سے دنیا کی ایک بہت بڑی  
آبادی کا اہم حصہ میں اور ہماری وہ  
جماعت جسے ہم راشٹریہ جماعت کہتے ہیں۔  
ایسے انٹرایکشن جگہ میں۔ یونا یونیورسٹیشن  
نیشنل میں۔ اس میں بات چیت کے سلسلہ

میں ہمیں رکھنا ہے۔ میں شامتری جی سے  
یورپ روپ سے سمیت ہوں کہ وہ دیش میں  
ہمارے جو بنتا جاتے ہیں۔ انکو اپنی جماعتوں  
میں سے کسی جماعت کو قوری پناہ دینا چاہیے  
روپ نشیپت روپ سے جب قوری پناہ  
کا پریشی آئیگی۔ تو وہ راشٹریہ جماعت  
کا ہوگا۔ ہم نے صفی کا جو نقصان کیا ہے

اسے ہمیں سے بڑے طریقے سے پورا کرنے کی  
وشش کرنی ہوگی۔ میں یہ نہیں مانتا  
کہ دش کے اندر تو اس پر کاری  
ت ہے کہ جو سادھان جن ہیں۔ وہ صفی  
سے اس کے سے کالیشن رکھتے ہوں۔ دیش  
رکھتے ہیں۔ یاد دہی رکھتے ہیں۔

میں سب سے بڑا نقصان ہمارا جو ہوا ہے۔  
وہ یہ ہے کہ ہم نے عباس شاہ کو راج نہیں کیلئے  
برہمن کو کیا ہے۔ نشیبت روپ سے یوری  
یہاں ہمارا آدرن پر دن زیادہ ہوا اور  
راج نہیں کیلئے اسکا استعمال نہیں کریں۔  
قواسی سے صفدی کو بڑھاوا ملے گا۔ صفدی  
سے کبھی اردو کو نظر آیا گیا اور کبھی دکنش  
عبادت کے اندر صفدی اور وہاں کی استعمال  
عبادتوں کو بڑایا گیا۔

انت میں میں نہیں چاہتا ہوں  
یہ جو ہماری راشٹریہ عباس شاہ سے ہے  
کچھ دل کا پرورش کرنا چاہیے کہ جس قدر  
میں یہ عباس شاہ اکثریت سے بولی جاتی ہے۔  
جہاں زیادہ سے زیادہ یہ صفدی عباس  
بولی جاتی ہے۔ وہاں صفدی والوں کا ہمارا  
سب کا یہ فرض ہوتا ہے کہ ہم یہ دیکھیں  
کہ جو صفدی عباس شاہ ہیں۔ علاقائی  
عباس شاہ ہیں۔ جنکا اپنا کوئی ٹھکانہ  
ہے۔ لیکن کسی علاقہ میں جو صفدی  
علاقہ ہیں اور وہاں ہزار۔ دو ہزار لوگ  
بھی اپنی کوئی استعمال عباس شاہ یا مادری  
زبان بولنا چاہتے ہیں تو صفدی کا اس  
عباس شاہ سے کوئی جھگڑا نہیں ہونا چاہیے۔  
اسی طرح سے دکنش عبادت میں باہر لے

عباس شاہ نے وہ ہیں انہیں بھی اس بات  
وہ دھیان میں رکھنا چاہیے کہ ہمارا صفدی  
سے کوئی ورودھ نہیں ہے۔ یہ جیسے 5  
سال کے اندر اس میں بہت تبدیلی آئی ہے۔  
لیکن مکھدہ روپ سے نقصان جب ہو  
جاتا ہے۔ تب ہم اسکا راج نہیں کرنا  
ملکتے ہیں۔ میں ملنے منتری جی کھو بدھا  
دینا چاہتا ہوں تاکہ اس بل کو یہاں وہ لائے  
ہیں۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ اتفاق دے  
سے یہ بل پاس ہو گا اور صفدی کی پرگتی  
کے راستے میں ایک نیا ایام بنیگا صفدی

PROF. (SHRIMATI) BHARATI RAY (West  
Bengal): Madam, I beg your permission to speak  
in English. Yesterday, a friend of mine, who is  
very sharp and for whom I have great regard, ad-  
vised me to be a good student. I hope to be a  
good student of Hindi, and with the help of my  
two colleagues, Shri Vishnu kant Shastriji and  
Shrimati Chandra kala Pandey, I hope to be able  
to learn Hindi in a rather short time. But for  
today, I would like to seek your permission to  
speak in English.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ  
KHAPARDE): Please go ahead. You can speak  
in English.

PROF. (SHRIMATI) BHARATI RAY:  
Madam, I rise to support the Mahatma Gandhi  
Antarrashtriya Hindi Vishwavidhyalaya Bill,  
1995. The Bill seeks to establish a university for  
the promotion and development of Hindi language  
and literature, through teaching and research. It is  
welcome, particularly if this is promoted as a  
centre of learning. Yet, I have a few questions to  
put and a few clarifications to seek.

In the first place, with the limited resources at our disposal, the existing universities, with one of which I was intimately connected, are finding it very difficult as they are suffering from an acute scarcity of funds. We have to consider whether we have enough resources to build a university. Here I agree with Dr. Aram that a university should be well-equipped because there is no point in building an institute and leaving it at a half-completion stage. So, we have to consider that. The existing universities are being advised to generate their own resources. They are unable to do so in having the knowhow. Now, the industry is likely to come to the help of the academia only if the academia produces research and manpower for it. Just as my friend said, the British system of education was supported and promoted in order to produce bureaucrats at the lower echelons for the colonial rulers.

Now, the question to consider is whether we have enough funds, whether we fund it properly, as adequately as for the universities, or the new university will be advised to start from the very beginning to develop its own fundings. The second question is that there are many Hindi Departments in the different Universities of India. Some of them are very good. One of them is headed by my friend, Shri Vishnu Kant Shastriji. They do not have enough money to fill up the posts. They have no money for research. How much money should be given to them- for the promotion of this official language about which some of my colleagues have expressed very strong opinion? Some money should be given to these Departments also. In any case, what is the envisaged coordination, that is, a sort of correlation between these Hindi Departments and the projected or proposed University? It is important because clause 6 says, "The jurisdiction of the University will extend to the whole of India." So, this question of coordination and interrelation becomes important. The third and the most important question is that

there are 14 official languages in India, each of which needs support; needs to be promoted. Now, Hindi should not be isolated from these languages and other disciplines which were just mentioned because there is a possibility of growing isolation, if I may say so, or arrogance. My training as a historian rings a warning bell that there is a little danger of forces of disintegration arising out of this attempted and cherished integration. In this whole Bill there is just half a sentence about the comparative studies in research in Hindi and other Indian languages. I think there is need for a much greater emphasis on interaction with other languages for cross-fertilisation of ideas which was also recommended by the Standing Committee. For universal values our Indian languages like Telugu, Kannada, Tamil, Bengali and various others are very rich and they should be given due recognition and place of importance in this new University. To provide that, may I humbly make two suggestions? The first suggestion is that sound knowledge of at least one other Indian language should be made compulsory for admission requirement. That is to say, You may know English, German or Spanish, but acquaintance in one other Indian language is a must. The second suggestion is this. The 'School of Culture' be substituted by the 'School of Comparative Literature' because two Schools of Language and Literature should be able to serve the cause of culture as well. What is language and literature if they are not vehicles of culture in any way? Coming to the provisions of the Bill - I would go clause by clause - there is one thing, and I would not call it an anomaly, but a question, that there is a post of Visitor; then there is a Chancellor; then there is a Vice-Chancellor as well. Now, the functions of the Visitor have been detailed. The powers and the function of the Vice-Chancellor have been mentioned. But nothing is mentioned about the Chancellor. It is mentioned in the Bill that he is an officer of the University unlike the Chancellor in Calcutta. *(Time Bell)* Half a minute,

Madam. The Vice-Chancellor is a whole-time salaried staff, but nothing is mentioned about the Chancellor. His only function is that he will visit at the convocation and he is nominated from amongst some academicians. So, there is a potential danger of tension between the Chancellor and the Vice-Chancellor if the powers and functions of both are not properly mentioned or defined. Secondly, there is also a danger of tension between the Executive Council and the Academic Council.

Secondly, there is also a danger of tension between the Executive Council and the Academic Council. I will not go into the details due to paucity of time. I will not go para by para. But, I would like to mention that the Academic Council has the powers to decide the Academic Policies of the University — Clause 22 — and proper action there on. Clauses 5 and 13 of the Bill give the Executive Council the power to consider the recommendations of the Academic Council without specifying who the final authority is. One would not like to be a rubber stamp of the others and the others would not like that their decisions are not accepted by the Executive Council. So, Madam, these are the few points and comments that I would like to submit to the hon. Minister for his kind consideration. With these remarks, I support the Bill. Thank you.

है सेक्शन 3 में There shall be an established university by name Mahatma

**श्री एच० हनुमन्तप्पा :** उपसभाध्यक्ष महोदया, प्रो० अरम् साहब ने अपनी तकरीर शुरू करते हुए बताया कि 223 यूनिवर्सिटी अभी देश में मौजूद हैं और हिन्दी विश्वविद्यालय बन जाने से 224 विश्वविद्यालय हो जाएंगे। सारे विश्वविद्यालय अंग्रेजी का प्रचार कर रहे हैं, उसकी अभिवृद्धि कर रहे हैं। यह जो हिन्दी के लिए विश्वविद्यालय आ रहा है, इसमें कम से कम हिन्दी में ही काम करना है। इसीलिए मैंने एक अमेण्डमेंट मूव किया Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya', which will carry all its activities in Hindi language.

**एक माननीय सदस्य:** इस हिन्दी में हाना चाहिए था।

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** जरूर। चूंकि अब अंग्रेजी में किताब आई है, अंग्रेजी में ही लिखा है। जब मैं हिन्दी में बोल सकता हूँ तो अमेण्डमेंट भी मैं हिन्दी में दे सकता हूँ।

**श्री विष्णु कान्त शास्त्री:** आपने मेरी बात का समर्थन किया, इसके लिए धन्यवाद।

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** आपने भी बिल का समर्थन किया है, मैं भी बिल का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

**श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश):** शास्त्री जी की अच्छी बात का हम समर्थन करते हैं। ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे):** आपका जो अमेण्डमेंट आया है। वह हिन्दी में नहीं आया, अंग्रेजी में आया है।

**श्री एच० हनुमन्तप्पा:** वह तो मैं करेक्ट कर देता हूँ ... (व्यवधान)...

**उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे):** नहीं, नहीं। हनुमन्तप्पा जी, मैंने करेक्शन के लिए नहीं कहा। Do not misunderstand ..... (interruptions)....

SHRI H. HANUMANTHAPPA: The background of which I am talking about सवाल यह है कि सरकार का मशरूफ़ है? आप हिन्दी के लिए अलग विश्वविद्यालय का बिल लाते हो और हिन्दी को जोड़ नहीं सकते। मैं एक घटना आपके सामने रखना चाहता हूँ। मैडम, 1947 में आजादी के तुरन्त बाद आचार्य कृपलानी जी, सुचेता कृपलानी जी हासन में आए। शायद आपके प्राइम मिनिस्टर उस जमाने में वहां स्टुडेण्ट थे। आजादी के तुरन्त बाद, देश के नेता आ रहे हैं आचार्य कृपलानी जी, तो हजारों की तादाद में लोग जमा हुए उनको सुनने के लिए। आचार्य जी खड़े हो गए और हिन्दी में अपना भाषण शुरू किया। सारे लोग बोले कि अंग्रेजी में बोलो, हम हिन्दी नहीं समझते हैं। आचार्य जी बोले - हमने अंग्रेजी को भारत से हटा दिया, मैं अंग्रेजी में नहीं बोलूंगा। वह बैठ गए। सुचेता जी, दूसरे नेता आपस में चर्चा करते बैठे रहे। इधर लोग हिले नहीं कि हम तो आपको सुनकर जाएंगे। आचार्य जी ज़िद करके बैठे रहे कि मैं हिन्दी के सिवा अंग्रेजी में नहीं बोलूंगा। तब हमने बहुत मुश्किल से हिन्दी अध्यापकों को घोंड़ में दूँटना शुरू किया और वह मिले नहीं, लेकिन कोई महाराजा कॉलेज के एक हिन्दी आफिशल के विद्यार्थी मिले। उस समय मैं तो सेवा दल का कार्यकर्ता

था। तो उस विद्यार्थी को पकड़ लाए और कहा कि छोटे छोटे जैसे कन्नड़ में अनुवाद करो, जो हिन्दी में नेता-जी बोलें। उस जमाने में जैसे नेताओं में हिन्दी के लिए जो मान था, क्या आज की सरकार को चाहे वह हमारी हो या इनकी भी हो, मंशा ठीक है?

अच्छा है कि राजभाषा सलाहकार समिति के सदस्य यहां बैठे हैं। आपको मालूम है कि उधर पोस्ट नहीं है, टाइपराइटर नहीं है, टाइपिस्ट नहीं है। आज सरकार का सारा काम अंग्रेजी में चलता है और हिन्दी में आप अनुवाद कर रहे हैं। हिन्दी में काम करो और अंग्रेजी में अनुवाद करो। अंग्रेजी का अनुवाद बालू को चाहिए, नारायणसामी को चाहिए, हनुमन्तप्पा को चाहिए, सिन्धे रज्जी को नहीं चाहिए। जिनको अंग्रेजी का अनुवाद चाहिए, अंग्रेजी में अनुवाद करके दे दो। जो काम हिन्दी में कर सकते हो, वह काम अंग्रेजी में क्यों करते हो? यह मंशा ठीक नहीं है। ये हिन्दी के लिए एक विश्वविद्यालय ला रहे हैं। मैं सरकार की मंशा देखना चाहता हूँ, मेरे अमेंडमेंट को वह स्वीकार करें। अगर वह अमेंडमेंट फेल हो गया तो हिन्दी फेल हो जाती है। मैं तो अमेंडमेंट विद्वद्ग करने वाला नहीं हूँ। हिन्दी लैंग्वेज के लिए एक यूनिवर्सिटी आ रही है, मैंने उसमें एक अमेंडमेंट मूव किया है, मैं वह अमेंडमेंट विद्वद्ग नहीं करूंगा। मंत्री जी, हिन्दी को आप हर ओर, हिन्दी को हाउस में हर ओर और हिन्दी बिल पास करो या फिर हिन्दी में ऑफिशियल अमेंडमेंट एक्सेप्ट करो।

श्रीराम के पट्टाभिषेक के बाद सीता माता ने हनुमान जी को एक मोतियों की माला दी। मैं हनुमान हूँ। हनुमान जी ने एक-एक मोती को तोड़कर देखा। सीता माता गुस्सा हो गई कि यह क्या बात है, मैंने तो इतने प्यार से तुमको माला दी है और तुम इसको तोड़ रहे हो। हनुमान जी बोले कि मैंने तोड़कर देखा कि इधर कोई राम है क्या? मोती में राम नहीं था। तब सीता माता ने गुस्से में पूछा कि राम कहाँ हैं? तो हनुमान जी ने छाती फाड़कर दिखाया कि राम इधर हैं और उसका एक बाल भी निकालकर फेंका तो वह भी 'राम-राम' बोल रहा था।

जब हिन्दी का काम कर रहे हैं तो हिन्दी में होना चाहिए। हिन्दी विश्वविद्यालय का काम कम से कम हिन्दी में होना चाहिए। अंग्रेजी बढ़ाने के लिए हिन्दी विश्वविद्यालय चाहिए क्या? उसके लिए है बहुत सारे विश्वविद्यालय। यह 224वां विश्वविद्यालय, हिन्दी विश्वविद्यालय हम अंग्रेजी का काम बढ़ाने के लिए बना रहे हैं क्या? इसलिए सरकार की मंशा को यह चुनौती है

कि वह इस अमेंडमेंट को एक्सेप्ट करे। हिन्दी के नाम पर बहुत कुछ हम बोल रहे हैं, बहुत पैसे खर्च हो रहे हैं लेकिन हिन्दी का काम नहीं हो रहा है।

मंत्री जी, आपने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का नाम लिया है। मैं उसी का विद्यार्थी हूँ। उसका अध्यक्ष भी रह चुका हूँ कर्नाटक शाखा का। उसका काम भी मैंने देखा है। वहां हिंदी का स्कूल भी है और परीक्षाएं भी चलती हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दक्षिण भारत के लोग हिन्दी के खिलाफ नहीं हैं। हिन्दी के खिलाफ आप लोग हैं जो हिन्दी के बिना हिन्दी का बिल ला रहे हैं। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप अपनी मंशा ठीक रखिए। हिन्दी के लिए हम सब तैयार हैं। महात्मा गांधी के कहने पर हमने आजादी के पहले ही हिन्दी सीखना शुरू कर दिया था। हम देख रहे हैं कि यहां हिन्दी के नाम पर चिल्लाना चल रहा है, हिन्दी के नाम पर पैसा खर्च हो रहा है लेकिन हिन्दी का काम कुछ नहीं हो रहा है। आपने यह महसूस किया कि हिन्दी पीठ के रहते हुए हिन्दी का काम नहीं हो रहा है, 223 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का काम नहीं हो रहा है। इसको समझ-बूझकर आप हिन्दी के लिए एक अलग विश्वविद्यालय बनाने का बिल लेकर आए हैं, इसलिए हिन्दी के सिवाय दूसरी भाषा का चलन नहीं रहना चाहिए, इतना कहकर मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ।

डा० वाई० लक्ष्मी प्रसाद (आन्ध्र प्रदेश): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय, गांधी जी के यह शब्द आज मुझे याद आ रहे हैं — "हम अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुए हैं लेकिन अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त नहीं हुए हैं।" स्वतंत्रता के 50 साल बाद जब हम स्वर्ण जयंती मना रहे हैं तो इस 50 साल बाद हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना का जो विधेयक इस सदन में श्री ओम्पई जी के हाथों से पेश किया गया है, यह बड़े सौभाग्य की बात है ... (व्यवधान) ...

हनुमन्तप्पा जी ने जो बताया है कि हिन्दी के विरोधी दक्षिण वाले नहीं हैं, हिन्दी के विरोधी हिन्दी वाले ही हैं, क्योंकि सर्वप्रथम भाषा के रूप में एक तमिलनाडु विश्वविद्यालय की स्थापना तमिलनाडु में हुई है और विचार आते ही सालों में तेलगू विश्वविद्यालय की स्थापना हैदराबाद में हुई है। लेकिन हिन्दी विश्वविद्यालय का विचार 20 साल बाद आज हो रहा है। इसलिए इससे भी हमें पता चलता है कि हिन्दी के विरोधी कौन हैं। उपसभाध्यक्ष महोदय, इस संदर्भ में मैं दो विषयों पर मंत्री जी की दृष्टि को लाना चाहता हूँ। आज एक और सौभाग्य मुझे मिला है। हमारे बाजूबल बालू साहब ने



यह ऐलान कर दिया है कि इस सदन में डी०एम०के० हिन्दी के विरोधी नहीं हैं। इसलिए मैं आपके माध्यम से उनसे विनती करता हूँ कि भारत के हर प्रान्त में जहाँ भी हो हम यत में और दिन में सुबह हिन्दी समाचार दूरदर्शन में सुन सकते हैं, तमिलनाडु में नहीं सुन सकते हैं। इसलिए मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि किसी भी भारतवासी को तमिलनाडु में हिन्दी समाचार सुनने और देखने का सौभाग्य मिले। ... (व्यवधान) ...

श्री एच० हनुमन्तप्पा: मैं परसें मद्रास में था, हिन्दी में न्यूज सुनी... (व्यवधान)... बस चैनल बदलना है। मद्रास में बैठ करके हिन्दी का समाचार सुन सकते हैं ... (व्यवधान) ... उनको मालूम नहीं है।

डा० वाई० लक्ष्मी प्रसाद: अगर हो रहा है तो धन्यवाद ... (व्यवधान) ... नेशनल नेटवर्क पर नहीं हो रहा है। मैडम, मैं आपको ज्यादा समय नहीं लूंगा। इस विधेयक के दो विषयों पर मंत्री जी की दृष्टि को आकर्षित करना चाहता हूँ। एक था, इस विश्वविद्यालय की स्थापना और कार्य परिषद के निर्माण में पूरे दक्षिण भारत में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना के बाद गांधी जी ने सर्वप्रथम अपने बेटे देवदास गांधी जी को हिन्दी प्रचारक के रूप में दक्षिण भेजा था। उसके बाद ट्रेनिंग देकर फिर वापिस आए। तब से लेकर अब तक हिन्दी साहित्य को सुसम्पन्न करने वाले बहुत से हिन्दी पंडित और साहित्यकार दक्षिण से आए हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश आज तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में उन हिन्दी प्रांतों का नाम और निशान नहीं है। इसलिए मैं इस विषय पर यह जो अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय है उसकी स्थापना और उसके कार्य परिषद के निर्माण में पूरे देश को दृष्टि में रखकर सभी प्रांतों से, सभी राज्यों से जो विद्वान हैं उनको सदस्य बनाने की कृपा करें। दूसरी बात यह है कि उन्होंने दृष्टि आकर्षित की है तुलनात्मक अध्ययन के बारे में। क्योंकि भारतीय भाषाओं की पुष्टि से ही राजभाषा हिन्दी की पुष्टि हो सकती है। इसलिए तुलनात्मक अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है। इसलिए तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की पीठ को भी इसमें शुरू करें तो अच्छा होगा। इस संदर्भ में विष्णु कान्त शास्त्री जी ने जो सुझाया है, क्योंकि अंग्रेजी विदेशी भाषाओं से और हर एक भाषाओं से शब्दों को अपनाकर अपने भाषा के शब्द भंडार को बढ़ाती है इसलिए लोग उसको अधिक चाहते हैं। यह रेल, रोड सभी अपनाते हैं। हमको हिन्दी में कट्टरता से कुछ दूर रहना है। अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपनाना है। उदाहरण के लिए, "सबवे"

यह तीन अक्षरों का शब्द है, जबकि हिन्दी में उसकी जगह लिखते हैं-भूमिगत पैदल पार पथ" देखिए, राममनोहर लोहिया अस्पताल के सामने ऐसा सबवे पर लिखा हुआ है। तो हमें इस कट्टरता से भी दूर रहना है। मैं कहता हूँ कि हिन्दी को धोपना नहीं है। मैं हमेशा कहता हूँ कि हिन्दी को चन्दन के समान लेपना है, तिलक के समान लगाना है। चन्दन की शीतलता और तिलक की पावनता हिन्दी के प्रचार और प्रसार में होनी चाहिए। उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं इस विधेयक का स्वागत करते हुए धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

श्री नरेश यादव (बिहार) उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं हिन्दी प्रदेश से आता हूँ और हिन्दी के प्रति प्रेम है। ... (व्यवधान) ...

श्री सतीश अग्रवाल: (राजस्थान): हमारे दो सम्मानीय सदस्य श्री हनुमन्तप्पा कर्नाटक से आते हैं और श्री लक्ष्मी प्रसाद आन्ध्र प्रदेश से आते हैं ये दोनों ही हिन्दी में बहुत अच्छा बोले हैं। इसलिए यह मिथ्या प्रचार है कि दक्षिण में हिन्दी का विरोध है।

श्री नरेश यादव: महोदया, हमारी संविधान निर्मात्री सभा ने 15 साल में इस देश में सरकारी कामकाज की भाषा अंग्रेजी के बजाय हिन्दी को बनाने का फैसला लिया था, वह आज तक पूरा नहीं हुआ। 1975 के संकल्प को 1996 में संयुक्त मोर्चे की सरकार और हमारे माननीय मंत्री श्री एस०आर० बोम्बई साहब ने इस बिल को यहां लाकर एक महान कार्य किया है इसका मैं स्वागत करता हूँ और हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मैं हाउस का ज्यादा समय नहीं लूंगा। डा० राम मनोहर लोहिया अमेरिका के दौर पर थे, जिन्हें हिन्दी से अटूट प्रेम था। वहां के नौजवानों ने डा० लोहिया साहब को घेरा और घेर करके पूछा कि डा० लोहिया साहब भारत में गरीबी है, अकाल है, बेरोजगारी है और आप फिर हिन्दी के लिए क्यों आन्दोलन कर रहे हो? तो डा० राम मनोहर लोहिया साहब ने कहा कि आप बताओ अमेरिका की भाषा क्या है? नौजवान ने कहा कि यहां की भाषा अंग्रेजी है। इस पर डा० लोहिया साहब ने कहा कि आज से केनेडी साहब को कहो कि अमेरिका की भाषा अंग्रेजी के बजाय हिन्दी कर दे तो नौजवान बोला कि ऐसा कैसे होगा? डा० लोहिया ने कहा कि अगर हो गया तो क्या करोगे? इस पर नौजवान ने कहा कि मैं पूरे अमेरिका में आग लगा दूंगा। आप समझ सकते हैं कि कितना प्रेम उस देश के नौजवानों में अपनी भाषा के प्रति है। आज हमारे देश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति कितना प्रेम है वह मैं आपको बताता हूँ। यहां हिन्दी दिवस मनाया जाता है

लेकिन हवाई जहाज की उड़ान में हिन्दी का अखबार नहीं दिया जाता है। अगर हम दक्षिण में जायें तो कोई बात नहीं है वहाँ तमिल, तेलुगु, कन्नड़ पढ़ने वाले हैं इसलिए वहाँ पर हिन्दी का अखबार नहीं दिया जाता है तो कोई बात नहीं है लेकिन हिन्दी प्रदेशों में हिन्दी का अखबार नहीं दिया जाता है। हिन्दी का अखबार मांगने पर कहा जाता है कि हिन्दी के अखबार की मांग नहीं है। यह बड़े दुख की बात है मैं अपने साथी श्री नारायणसामी जो कि पंडिचेरी से आते हैं और जिनकी मातृ भाषा तमिल है और श्री हनुमन्तप्पा जी जो कि कर्नाटक से आते हैं और जिनकी मातृभाषा कन्नड़ है, ने आज हिन्दी में बोलकर के न केवल इस सदन का बल्कि हिन्दी की मान-मर्यादा को बढ़ाया है, को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही श्री लक्ष्मी प्रसाद जी जिनकी मातृभाषा तेलुगु है और तेलुगु भाषा के रहते हुए भी इन्होंने हिन्दी में बोलकर हिन्दी का सम्मान बढ़ाया है इसलिए इनको भी धन्यवाद देता हूँ। आज हिन्दुस्तान के 90 करोड़ लोगों में से 35 करोड़ लोगों की भाषा हिन्दी है तो क्या आप अपनी भाषा हिन्दी में इस सदन में नहीं बोल सकते हैं? पूरी दुनिया के 38 करोड़ लोग हिन्दी बोलते हैं। मैं आपको बता दूँ कि दुनिया के मुल्कों में हिन्दी कहाँ-कहाँ है, रूस, चीन, फिजी, अमेरिका, पाकिस्तान, कनाडा, नार्वे, हंगरी, चेक, रोमानिया, बुल्गारिया, भारीशस, त्रिनिदाद, भूटान, बैकनक और सूरीनाम आदि देशों में हिन्दी बोली जाती है। कहीं हिन्दी के प्रति कोई नफरत नहीं है इसमें इच्छा शक्ति की जरूरत है।

महोदया, मुझे उस समय खुशी हुई जब मैं इंग्लैंड के दौर पर था। मैं नाम भूल रहा हूँ हमारी एक हिन्दुस्तान की महिला वहाँ हाउस आफ लार्ड्स की मेम्बर है। हाउस आफ लार्ड्स की उस महिला मेम्बर ने जब हम लोगों को पूरा सदन घुमाया तो वह महान महिला हम लोगों को हिन्दी में बता रही थी। मैंने कहा कि आप हिन्दी बोलना जानती हैं, तो वह बोली क्यों नहीं। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ और हिन्दी जानती हूँ।

हमारे देश से जो शिष्टमंडल विदेश में गया था उनके स्वागत के लिए उस देश के लोगों ने खाने पर बुलाया और पूरी की पूरी बातचीत हिन्दी में की लेकिन हमारे देश के शिष्ट मंडल अंग्रेजी में ही बोले। भारतीय लोग विदेशों में जाकर हिन्दी में बोलना अपना अपमान समझते हैं। हिन्दी बोलना अपमान नहीं है, हिन्दी बोलना स्वभिमान है क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। पिछले वर्ष उज्जैनगिरान का एक शिष्टमंडल भारत आया था उसके स्वागत के लिए हमारे देश के प्रतिनिधि जब गये

तो मुझे उस समय बहुत झटका लगा जब उन्होंने अपना पूरा भाषण अंग्रेजी में दिया लेकिन उज्जैनगिरान के प्रतिनिधि जब भारत का आभार प्रकट करने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने अपना भाषण हिन्दी में शुरू किया। हमारे लिए यह कितने शर्म की बात थी। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे मानव संसाधन मंत्री ने यह विधेयक लाकर बहुत अच्छा काम किया है। इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि जिस तरह से पूरे देश की जनता और यह सदन अपना संदेश भेज रहा है, आज अच्छा संदेश पूरे देश में जा रहा है, एक महान भाषा के प्रति पूरा सदन एक है। जैसा अभी हनुमन्तप्पा साहब ने कहा कि अंतराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का काम हिन्दी में ही होना चाहिये, यह बहुत आवश्यक है यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा सारा काम-काज अंग्रेजी में होगा। आज हमें अपनी इच्छाशक्ति को जगाना है। अपनी प्रतिष्ठा से अंग्रेजी को न जोड़ें अपितु हिन्दी को जोड़ें। अगर हमने अपनी प्रतिष्ठा से अंग्रेजी को जोड़ लिया तो हम कभी देश का कल्याण नहीं कर सकेंगे। हमारी प्रतिष्ठा इसी में है कि हम देश की अपनी भाषा तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली या मलयालम जो भी हो ये सभी भाषाएँ हमारी भाषाएँ हैं। जितना देश का विकास इस देश की अपनी भाषा में हो सकता है उतना अन्य किसी भाषा में नहीं हो सकता।

श्री गया सिंह (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं सबसे पहले मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि ये महात्मा गांधी जी के नाम पर अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एक बिल इस सदन में लाये हैं। मैं अपनी पार्टी की ओर से इस बिल का पूर्णरूप से समर्थन करते हुए सिर्फ एक दो बातों की चर्चा करना चाहता हूँ। महात्मा गांधी न आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करके असहयोग आंदोलन द्वारा विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। उनके मरने के बाद, उनकी शहादत के बाद इस देश में हिन्दी को जिस रूप में अपनाया जाना चाहिये था अभी तक नहीं अपनाया गया है।

कुछ माननीय सदस्यों के ठीक ही कहा है कि 1975 के बाद हम 1996 में इस बिल को ला रहे हैं लेकिन इस संयुक्त मोर्चा की सरकार को और उसके मंत्रियों को हम धन्यवाद देना चाहते हैं कि 25 साल बाद भी इन्होंने महसूस तो किया और सत्ता में आने के बाद अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय की स्थापना का बिल लाये हैं। एक

दो सुझाव देकर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। आज देश में 223 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का जो प्रचार और प्रसार होना चाहिये वह नहीं हो रहा है। वह

शंका जरूर है कि इस अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना में कितना समय लगेगा और इसके इन्फ्रस्ट्रक्चर के लिए जो जरूरतें हैं, जो आवश्यकताएं हैं उनके लिए सदन में यदि आज मंत्री जी घोषणा करें तो माननीय सदस्यों की शंका भी दूर हो सकती है। देश की एकता और अखंडता के लिए देश में जो हमारी राष्ट्रभाषा है, जिसकी चर्चा कुछ माननीय सदस्यों ने की, चाहे इस देश के प्रधान मंत्री हो, एम्बेसडर हों या कोई भी ऑफिसियल हो वह

15 अगस्त व 26 जनवरी के मौकों पर लाल किले से या राज्यों में देश को सम्बोधित करें तो नीचे के लोगों में हिन्दी के प्रति श्रद्धा होगी। इस देश में जो विदेशी राजनीयक आते हैं वे चाहे पार्लियामेंट के अंदर बात करते हैं या बाहर बात करते हैं सभी अपने-अपने देश की भाषाओं में बात करते हैं लेकिन हमारे देश के लोग विदेशों में जाकर अंग्रेजी में ही बात करते हैं। पिछले साल रसा के प्रेसीडेंट...

श्री सतीश अप्पलाल: चेक रिपब्लिक के जो राजदूत दिल्ली में हैं वे बढ़िया हिन्दी बोलते हैं। वहां पर हम लोग प्रेसीडेंट के साथ गए थे अक्टूबर में तो वहां क्रेकोव यूनिवर्सिटी में हिन्दी भाषा का विभाग है; रामायण, महाभारत, गीता, कुरान वहां सब पुस्तकें हिन्दी में हैं। हम लोगों ने और राष्ट्रपति महोदय ने ढेर सारी हिन्दी पुस्तकें उनको भेंट की हैं। वहां बहुत ज्यादा प्रचार हिन्दी का है।

श्री गया सिंह: उपसभाध्यक्ष महोदय, दो साल पहले रूस के राष्ट्रपति यहाँ आए थे। वे रूसी में बात कर रहे थे और हमारे यहाँ के लोग, हमारे जो नेता हैं वे अंग्रेजी में बात कर रहे थे। इसलिए अंग्रेजी छोड़कर देश की जो भाषाएं हैं अगर उनका सम्मान करते हुए राष्ट्र भाषा को अगर हम आगे ले चलेंगे तो इससे देश का सम्मान बढ़ेगा और देश की एकता और अखंडता में एकरूपता आएगी। इससे देश की विभिन्न जातियों और भाषाओं के लोगों में देश के प्रति, राष्ट्रभाषा के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी और हमारे अंदर जो साम्प्रदायिक भावना है उसमें कमी होगी तथा इससे हम देश को आगे ले जा सकेंगे। इन शब्दों के साथ जो यह बिल हमारे सामने आया है इसका मैं पूरा समर्थन करता हूँ और श्री हनुमन्तपन्थ जी ने जो संशोधन दिए हैं उन संशोधनों का जरूर समर्थन करूंगा। धन्यवाद।

श्री मोहम्मद आजम खान (उत्तर प्रदेश): वाइस चेयरमैन, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय बिल, 1995 पर बोलने का वक्त देने के लिए मैं आपको

आभारी हूँ, आपको शुकगुजार हूँ। यह अजीब इतिहास है कि कल ही मौलाना आजाद उर्दू यूनिवर्सिटी बिल पास हुआ है और आज महात्मा गांधी जी के नाम से अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय बिल पास होने की मंजिल में है। यह बड़ा अच्छा कदम है। इसका खैर मकदम होना चाहिए, स्वागत होना चाहिए। ऐसे राज्यों के सदस्यों ने, जहाँ हिन्दी बोलना कभी पाप समझा जाता था और अक्सर ऐसा हुआ है कि जब कभी हमारी उत्तर प्रदेश सरकार का डेलीगेशन दूसरी स्टेटों में गया और हम सदस्यों ने अगर रास्ता भी पूछना चाहा तो यह जानते हुए कि हम रास्ता बता सकते हैं, हमारी भाषा समझने के बावजूद, मेजबानों ने हम भटके हुए राहियों को रास्ता बताने की जरूरत नहीं समझी। लेकिन यह बड़ी सेहतमंद अलामत है कि किसी जुबान को जिंदा रखने के लिए उसको आगे की जिंदगी की जमानत मिले, ऐसा माहौल इस सदन में आज मिला है। जुबानों से तास्सुब रखने वाले लोग न अच्छे शहरी हो सकते हैं और न अच्छे इंसान हो सकते हैं। बहुत से लोगों ने हिन्दुस्तान की जुबानों से तास्सुब रखा और कुछ जुबानों को विदेशी जुबान कहा। लेकिन जुबानों की खूबी यह है कि उसको कोई भी मुंह अपनाए उसके अंदर अपनी मिठास होनी चाहिए ताकि जब वह किसी की जुबान पर चढ़े तो उसकी जुबान कड़वी न हो जाए। ऐसी कई जुबानें हैं जिनका यहां पर जिक्र करने की जरूरत नहीं है। जो बिल मौलाना आजाद उर्दू यूनिवर्सिटी के नाम से पेश हुआ तो उर्दू के लिए यह कहा गया कि इसमें अरबी-फारसी के 90 परसेंट अक्षर हैं। यह बात सच्चाई से परे है, बिल्कुल गलत है। ऐसा उन लोगों ने कहा जिनको अरबी की ज्ञान बिल्कुल नहीं होगा यह इसलिए कि अरबी कुरान की जुबान है। अरबी का ज्ञान उसी को हो सकता है जो कुरान मानता हो। लेकिन यह ऐसे व्यक्ति ने कहा है कि जिनके नाम के दोनों शब्द फारसी के हैं। अपने नाम को बदल न सके और जमाने पर पत्थर फेंकने लगे। तो जुबानों को तास्सुब करने वाले लोग अच्छाई के रास्ते पर नहीं हो सकते। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मैं खुद मुसलमान हूँ। मेरी लगभग सारी शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में हुई लेकिन बी०ए० में मैं हिन्दी लिटरेचर का छात्र रहा हूँ। जुबान सीखने में उस वक्त तास्सुब नहीं था। जिनके नाम से कल यहां बिल पेश हुआ मौलाना आजाद, तो हिन्दुस्तान में ऐसे चंद मुसलमान मजलूम होंगे जिनमें आजाद का नाम शामिल है। यह इसलिए कि वे हिन्दुस्तान को एक देखना चाहते थे। तत्कालीन हिन्दुस्तान का तसव्वुर उनकी जहन में नहीं था। वो हिन्दु-मुस्लिम बंटवारा नहीं चाहते थे। यही वजह

थी कि मौलाना आजाद जब एजुकेशन मिनिस्टर थे तो अलीगढ़ रेलवे स्टेशन पर वहां के छात्रों ने उनके गले में जूतों का हार डाला।

4.50 मं पं

लेकिन मौलाना ने अलीगढ़ के छात्रों से उसका बदला नहीं लिया था बल्कि वहां के लड़कों से यह पूछा था कि क्या तुम बता सकते हो जिस पाकिस्तान के बनाने के लिए तुमने लड़ाई लड़ी, जिसके लिए उसके गले में जूतों का हार डाला, उसकी अपनी ज़बान क्या है? वह छात्र उसका जवाब नहीं दे सके। इसलिए ज़बान का तासुब इस बुनियाद पर कि उसका किसी मज़हब से ताल्लुक हो, किसी सूबे या किसी ज़मीन से ताल्लुक हो नहीं किया जा सकता और मैं हिन्दी की वक़ालत इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि हिन्दी यहां की राष्ट्रभाषा है या जिस प्रदेश से मैं आता हूँ उसकी राज्य भाषा है, मैं इसलिए कर रहा हूँ कि हिन्दी एक अच्छी ज़बान है, इसे पनपना चाहिये, इसे फलना-फूलना चाहिये। इसके साथ-साथ मैं एक निवेदन करना चाहूंगा कि आखिर इस बात की क्यों ज़रूरत पेश आई कि कल या परसों दोनों सदनों ने एक उर्दू के नाम पर यूनीवर्सिटी कायम की है और दूसरी हिन्दी के नाम पर। हमें क्यों इस बात का डर हुआ कि अगर हम उर्दू यूनीवर्सिटी बनाने का बिल पास कर देंगे तो हिन्दी वाले नाराज़ हो जाएंगे और अगर हिन्दी का बिल पास कर देंगे तो उर्दू वाले नाराज़ हो जाएंगे? ठीक उस तरह जिस तरह अंग्रेज़ी ने हिन्दुस्तान में तालीम देते वक़्त बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी बनाई और फिर उसका वज़न बराबर करने के लिए दूसरे पलड़े में अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी को रख दिया (व्यवधान)

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: मैं बहुत अदब से कहना चाहता हूँ कि अंग्रेज़ों ने नहीं बनाई।

श्री मोहम्मद आज़म ख़ान: अंग्रेज़ों ने नहीं बनाई लेकिन अंग्रेज़ी के ज़माने में बनी।

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: वह बात अलग है।

श्री मोहम्मद आज़म ख़ान: अंग्रेज़ों के ज़माने में बनीं और कुछ तारीखी सच्चाइयों से इन्कार नहीं किया जा सकता कि बनीं, उनको बनाने वालों की येहनत से बनीं लेकिन अंग्रेज़ी के कुछ तरीके थे अपना राज करने के लिए। इसीलिए बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी बनी और इसीलिए अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी बनी और इसीलिए दोनों के मखसूस नाम भी रखे गये। बाद में वह खत्म भी नहीं हो सके और बदले भी नहीं जा सके और शायद उनको बदलने की ज़रूरत भी नहीं थी। मुझे यह

कुछ अजीब सा लगा कि दोनों यूनीवर्सिटीज़ एक दो दिन के फरसले में खास तौर से दोनों को बनाने का काम हुआ है मेरी इसमें गुज़ारिश आपने यह रहेगा कि हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय यूनीवर्सिटी जो महात्मा गांधी के नाम से बन रही है खुद हिन्दुस्तान में हिन्दी का इस्तेमाल होगा है लेकिन अक्सर परेशानी पेश आती है। अभी मैं रूल्ज़ एंड प्रोसीजर की किताब लेने गया था। कल मुझे अंग्रेज़ी की किताब मिली थी और आज मैं हिन्दी की किताब लेने गया। मुझ से कहा गया कि हिन्दी की किताब बहुत दिनों से नहीं है, छपने गई है, छप कर आएगी तब मिलेगी। वहां पर एक कमेंट यह भी सुनने को मिला कि अंग्रेज़ी की किताब से आपको ज्यादा अच्छी मदद मिलेगी, इसको आप आसानी से समझ पाएंगे, हिन्दी ट्रांसलेशन इतना सज्ज है कि आपको अलग से डिक्शनरी ले कर बैठना पड़ेगा। अगर हम हिन्दी को इतना संस्कृताइज़ कर देंगे, सज्ज कर देंगे कि हिन्दी को बढ़ने के लिए हिन्दी की डिक्शनरी की ज़रूरत होगी तो इससे हिन्दी का विकास नहीं होगा। इससे हिन्दी का नुकसान होगा। इसलिए इस यूनीवर्सिटी को बनाने के लिए इसके जितने भी हमारे यूनीवर्सिटी के फारमेशन होते हैं चांसलर, वाइस-चांसलर, एकेडेमिक कौंसल और उसके प्रिन्सिपल वगैरह वगैरह, लगता यह है कि सारी यूनीवर्सिटीज़ का करबा तो एक है वह सिर्फ नाम बदल देते हैं, तारीख बदल देते हैं बाकी सारी यूनीवर्सिटीज़ का फंक्शन एक ही तरीके से होगा। इसी सदन में यह शुबहा भी ज़ाहिर किया गया, अभी मैं शास्त्री जी को सुन रहा था, बहुत अच्छा लगा, आपने खदशा यह ज़ाहिर किया है कि इसमें कहीं ऐसा न हो कि नाम तो इसका हिन्दी यूनीवर्सिटी हो लेकिन सारा काम अंग्रेज़ी में हो। चूंकि यह अन्तर्राष्ट्रीय यूनीवर्सिटी है लिहाज़ इसको कुछ न कुछ काम उन देशों में होगा ही जिन देशों में इस ज़ुबान को ले जाने की ज़रूरत होगी। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि हमारी इस यूनीवर्सिटी में कोई ऐसा रिसर्च सेंटर हो जिसमें हम हिन्दी की मिठास में कुछ ऐसी ज़बान की मिठास भी ला सकें, अगर सदन को बुरा न लगे तो हम फारसी की सी मिठास ला सकें अगर ऐसी मिठास हम हिन्दी में पैदा कर सकें तो मैं सम्मन्न हूँ कि बहुत बड़ी खिदमत होगी। मैं आपको आभारी हूँ कि वेलकम करता हूँ, खुशामदीद कहता हूँ, स्वागत करता हूँ और दुआ करता हूँ कि हिन्दी और उर्दू का तासुब भी खत्म हो और जिस तरह से उत्तर प्रदेश में हमने हिन्दी और उर्दू को बड़ी और छोटी बहन इंट्रोड्यूस कराया गया है और पहली बार उर्दू के नाम से लोगों को रोज़ी-रोटी से जोड़ा है, बोम्बई साहब यहां तशरीफ रखते हैं मैं कल हाज़िर

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I understand what you are suggesting. (*Interruptions*)... I am prepared, if the House is prepared. (*Interruptions*)... I think the Minister wants to give a very detailed reply. (*Interruptions*)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: We should agree. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): That is why he needs some time. (*Interruptions*)... If the House agrees, well and good. (*Interruptions*)...

SHRI VAYALAR RAVI (Kerala): Madam, all the Members are in support of the Bill. Nobody suggested any serious amendments also. We have already lost three days. If the Treasury Benches do not want to pass the Bill today, we are helpless. (*Interruptions*)... Of course, we are ready to sit. (*Interruptions*)... Why can't we pass it today? (*Interruptions*)... Why can't we do it today? (*Interruptions*)... You have already studied the Bill. (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: No. I want to reply in detail. (*Interruptions*)...

SHRI VAYALAR RAVI: How can you pilot the Bill without studying it? (*Interruptions*)... How can you pilot the Bill without studying it? (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: I am frank enough to admit (*Interruptions*)...

SHRI VAYALAR RAVI: What is the criticism? (*Interruptions*)... There is no criticism at all. (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: Please listen to me. I want to reply in Hindi. I am not prepared for it. Everybody has spoken in Hindi. I want to explain my difficulty. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN • (MISS SAROJ KHAPARDE): Mr. Ravi, we should say 'okay'. (*Interruptions*)... If you want me to reply in English, I am prepared to do it today itself. (*Interruptions*)...

श्री श्री० नारायणसायी: मंत्री जी को मालूम है कि यह हिंदी को प्रमोट करने के लिए बिल आया है।

SHRI S.R. BOMMAI: I want to reply in Hindi. I am not prepared. (*Interruptions*)...

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, while speaking you permitted the Members to speak in English. Even while piloting the Bill you have permitted the Minister to start in Hindi and to conclude in English. Now while replying also he can do so. (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: Then let it be taken up today itself. I will speak in English. (*Interruptions*)...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: If the hon. Minister wants a little more time, as we always did in the past, why don't we give him some time today? (*Interruptions*)...

SHRI VAYALAR RAVI: He has made the Minister. (*Interruptions*)...

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, I am prepared. ...(*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: If he wants to reply on Mondy. ...(*Interruptions*)

SHRI S.R. BOMMAI: Madam, if the House decides that it should be taken up today, I am prepared to do so.

SHRI R.K. KUMAR (Tamil Nadu): If the Minister wants to speak in Hindi, he should be given time. (*Interruptions*). None of the DMK Ministers speaks in Hindi. At least, he wants to speak in Hindi.

श्री विष्णु दत्त शारसी: उनको हिन्दी में बोलने के लिए सोमवार तक के लिए अवश्य समय दिया जाए।  
... (व्यवधान)

श्री ईश दत्त चादव (उत्तर प्रदेश): मैं, मंत्री जी हिन्दी में बोलना चाहते हैं और हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की अब बात चल रही है तो एक दिन में, दो दिन में क्या हो जाने वाला है? मंत्री जी अनुरोध कर रहे हैं और मुझे प्रसन्नता हो रही है कि मंत्री जी दक्षिण भारत के होने के बावजूद भी हिन्दी में बोलने के लिए तैयार होना चाहते हैं। इसलिए मेरा अनुरोध है कि मंत्री जी को

नहीं हो सका था, मैं कल कहना चाहता था उद्घोषणा o'clock the statement will be made. It is not going to be a long-drawn statement. It is a short statement and our clarifications will also be short. ...*(Interruptions)*...

अगर किसी चीज़ को पढ़ने वाला उसके नाम पर रोज़ी हासिल नहीं कर सकता तो वह टेक्नोलोजी खत्म हो जाएगी और तालीम और इन्फ्रस्ट्रक्चर खत्म हो जाएगा। उर्दू हम फ़ड़ाए ख़ूब अच्छी तरह से लेकिन अगर उर्दू को फलने-फूलने का मौक़ा न मिले, उर्दू के नाम पर लोगों को रोज़ी-रोटी से नहीं जोड़ा जा सके और इसी तरह से अगर हिन्दी सीखने वालों को हिन्दी के स्कालरज़ को उसका सही मक़ाम न मिल सके और उनकी जिन्दगी रोज़ी-रोटी से न जुड़ सके तो हिन्दी तरकी नहीं कर पाएगी। इसी के साथ आप सभी का और मैडम का बहुत बहुत शुक्रिया।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खाण्डे): खान साहब, आप बहुत अच्छे बोले हिन्दी में। मैं सिर्फ़ सदन से एक निवेदन करना चाहती हूँ कि मेरे सामने जो लिस्ट है उसमें सिर्फ़ श्री ओ॰पी॰ कोहली जी बोलने वाले हैं और जहाँ तक मैं समझती हूँ कि आज हम लोग अगर यह जो बिल है इसमें जिन जिन को अपने विचारों को रखना था वे तो सारे बोल चुके हैं एक्सेप्ट कोहली जी, उनको भी बुलना लिया जाएगा, उसके बाद मंत्री जी को भी अपना उत्तर देने का मौक़ा दिया जाए और उस उत्तर के बाद हम इस बिल को सोमवार तक पास करने के लिए अगर समय दें तो ज्यादा अच्छा रहेगा क्योंकि उसके बाद जो मंत्री जी बैठे हैं उनको भी यहाँ पर बयान करना है। इसके लिए मुझे लगता है अगर आप सब एग्री हों, एजी हों तो इस मुताबिक करें...*(व्यवधान)*

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI S.R. BOMMAI): I will reply on Monday.

श्री सतीश अग्रवाल (राजस्थान): इसमें सोमवार तक जाने की उपसभाध्यक्ष महोदया क्या आवश्यकता है। कोहली जी बोल लें 5-10 मिनट, मंत्री जी बोल लें 5-10 मिनट, उनका उत्तर हो जाएगा, बिल पास हो जाएगा। कोई कंट्रोवर्सी है नहीं, कोई विवाद है नहीं और जब कोई विवाद नहीं है तो मैं समझता हूँ कि इसको पारित करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आप नहीं चाहते हैं आज उत्तर देना, तैयार न हों तो बात दूसरी है। अगर सोमवार तक इसको स्थगित करना चाहती है सरकार तो ...*(व्यवधान)* दूसरी बात है...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (WEST BENGAL): Madam, may I suggest one thing? It is suggested that at 4

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, the Supreme Court is also involved in this. ...*(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA : After the clarifications on the statement are over, let the hon. Minister speak. *(Interruptions)*... We will finish it today, Why do you leave it for Monday? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): I will leave it to the House. Whatever you deem proper; I will do it. *(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: We will go it today itself. ...*(Interruptions)*...

श्री सतीश अग्रवाल: इस विधेयक को आज ही पारित करना चाहिए ...*(व्यवधान)*... दूसरा कोई एजेंडा हमारे पास नहीं है... *(Interruptions)*...

SHRI S.R. BOMMAI: I make this request because I want to reply in detail. *(Interruptions)*... I want to reply in detail. *(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): The Minister wants some time. *(Interruptions)*...

श्री सतीश अग्रवाल: मंत्री जी तैयार नहीं हैं। वे समय चाहते हैं ...*(व्यवधान)* क्या उनको कोई व्यक्तिगत कठिनाई है ...*(व्यवधान)*

श्री एच॰ हनुमन्तप्पा: बिल आया है, तैयार नहीं है, ये क्या बोल रहे हैं ...*(व्यवधान)* वे तैयार नहीं हैं? यह क्या तरीका है ...*(व्यवधान)*

श्री बी॰ नारायनसामी: आप रिप्लाइ करने के लिए तैयार हैं तो आप भी शुरू करें ...*(व्यवधान)*

SHRI S.R. BOMMAI: I would like to reply in detail. I am not prepared. *(Interruptions)*

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, what I am suggesting is ...*(Interruptions)*...

पूरा समय दे दिया जाए। ... (व्यवधान) इनको तैयार होने दिया जाए। मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि हमारे मित्र नारायणसामी जो भी आज से हिन्दी में हो बोलेंगे ... (व्यवधान) लगता है कि ऐसी प्रतिज्ञा इन्होंने की है। ... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): बैठिए मि० यादव। ... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद मसूद खान (उत्तर प्रदेश): मैडम, अगर तीन दिन में हिन्दी सीखी जा सकती है तो तीन दिन समय देने में क्या फर्क पड़ता है। ... (व्यवधान)

اشارى محمد مسعود خان: ميڈم اگر  
تین دن میں صفی مباحثہ کی جا سکتی  
ہے تو تین دن سکھ دینے میں کیا فرق پڑتا  
ہے۔۔۔ محمد ارشدت۔۔۔

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): यह सोखने और सिखाने का सवाल नहीं है। मंत्री जी खुद ही हिन्दी जानते हैं, लेकिन उनको कुछ समय की जरूरत है। अगर सदन मुझे कहता है कि ठीक है, उनको समय दिया जाए तो वैंल एंड गुड, अगर सदन कहता है कि नहीं तो कोई आपत्ति नहीं है। ... (व्यवधान) ओ० पी० कोहली ... (व्यवधान) कोहली जी को बोलने दीजिए, उसको बाद मंत्री जी का स्टेटमेंट हम लेते हैं।

श्री ओम प्रकाश कोहली (दिल्ली): उपसभाध्यक्ष महोदया, मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने मुझे महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय विधेयक पर बोलने का समय दिया है। अब क्योंकि माननीय मंत्री जी आज इस बहस का उत्तर न दे कर बाद में देने वाले हैं इसलिए मैं उनके सामने इस विश्वविद्यालय की स्थापना से जो एक्सपेक्टेडेंस और अपेक्षाएँ हैं वे रखना चाहता हूँ ताकि वह इस बिल को संवारते समय इन अपेक्षाओं को ध्यान में रख सकें। एक तो यह अपेक्षा है कि यह प्रस्तावित विश्वविद्यालय हिन्दी की शिक्षा देने वाले अन्य 223 विश्वविद्यालयों जैसा बन कर न रह जाए बल्कि इस विश्वविद्यालय का अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व बने, इसकी अपनी एक पहचान बने, यह विश्वविद्यालय हिन्दी के लिए देश में और विदेश में अनुगम पैदा करने का एक शक्तिशाली साधन बने। इसलिए जो सुझाव श्रीमान् विष्णु कन्न शस्त्री जी ने और

हनुमन्तप्पा जी ने दिया जिसका समर्थन औरों ने भी किया मैं समझता हूँ कि वह बहुत सही सुझाव है और मैं भी उसका समर्थन करता हूँ कि इस विश्वविद्यालय के भीतर का वायुमंडल भी हिन्दी में होना चाहिए। इसका एडमिनिस्ट्रेशन, इसका प्रशासन, इसका कामकाज और इसका व्यवहार हिन्दी में संचालित होना चाहिए। महोदया, हिन्दी अभी तक उच्चतम स्तर पर शिक्षा का माध्यम बहुत से विषयों में नहीं बनी है और कहा जाता है कि हिन्दी की फंक्शनल कैपेसिटी या प्रक्रियात्मक क्षमता कम है। इसलिए इस विश्वविद्यालय से यह भी अपेक्षा की जाती है कि यह हिन्दी की फंक्शनल क्षमता को बढ़ाने का काम करेगा और वैज्ञानिक और टेक्नोलोजिकल विषयों में हिन्दी सर्वोच्च स्तर पर माध्यम बन सके, इसके लिए हिन्दी को और शक्ति प्रदान करने का काम करेगा। महोदया, सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक मूलभूत समानता है उस मूलभूत समानता की हम भारतीयता कह सकते हैं। यह विश्वविद्यालय सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करके उस मूलभूत एकता को, भारतीयता को रेखांकित करे, उजागर करे, ऐसी भी इससे अपेक्षा की जाती है। हिन्दी के बारे में और भारतीय भाषाओं के बारे में भी जैसा स्वाभिमान और गौरव का भाव देश में चाहिए उसमें अभी कमी दिखाई पड़ती है। कभी-कभी होनता की मानसिकता दिखायी पड़ती है। उस मानसिकता को दूर करके हिन्दी के बारे में और भारतीय भाषाओं के बारे में स्वाभिमान और गौरव का भाव जगाने का काम भी यह विश्वविद्यालय करे। मैडम, इस से और भी अपेक्षा है। इस से यह भी अपेक्षा है कि देश और विदेश के हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी के विद्वानों तथा हिन्दी के सेवकों को हिन्दी भाषा और साहित्य के संवर्धन में जुटाए। उन की सेवाओं का उपयोग करे, उन का सम्मान करे। देश और विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे हुई अनेक संस्थाएँ और संगठन हैं, उन के प्रयासों और गतिविधियों से यह विश्वविद्यालय अपने को जोड़े, अपने को समन्वित करे। यह विश्वविद्यालय हिन्दी के विषय में जानकारीयों और सूचनाओं के आदान-प्रदान का और हिन्दी के व्यवहार और प्रयोग का शक्तिशाली माध्यम बने।

महोदया, अंत में मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह आग्रह करना चाहूंगा कि वह इस विश्वविद्यालय को अन्य विश्वविद्यालयों जैसा एक विश्वविद्यालय न बना रहने दें। इस के प्रति विशिष्ट पहचान बनाएं जिससे कि यह विश्वविद्यालय हिन्दी की राष्ट्रभाषा के रूप में, संपर्क भाषा के रूप में, राजभाषा के

रूप में और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में और न्ययोचित स्थान दिलवाने में एक शक्तिशाली माध्यम का काम कर सके। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI JIBON ROY (West Bengal): Madam Vice-Chairperson, the hon. Minister is making a statement on a issue which concerns four Ministries—the Ministry of Labour, the ministry of Industry, the Ministry of Environment and the Ministry of Law. I am afraid, whether the Minister of Welfare will be able to reply to the questions that will arise out of this statement. Therefore, I feel it is not in order. The concerned Minister should come and make the statement. I do not know from which date, the Ministry of Labour and the Ministry of Industry entered the Ministry of Welfare. It is a very important issue. The entire work force in Delhi is involved.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam Vice-Chairperson, I agree with the hon. Member. This issue concerns various Ministries. I would like to know from when Shri Ramoowalia has taken over as Labour Minister. The Ministry of Industry, the Ministry of Labour, the Ministry of Environment and the Ministry of Law are all involved.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Let him make the statement.

SHRI JIBON ROY: In what capacity is he going to make the statement?

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): We are all exercised over this issue. We all know that so many Ministries are involved. Now Shri Ramoowalia will be making the statement. Will he be able to answer the questions arising out of the statement?

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Let the Minister reply.

#### STATEMENT BY MINISTER

##### Closure of industries in Delhi as a result of directions of the Supreme Court

THE MINISTER OF WELFARE (SHRI BALWANT SINGH RAMOOWALIA): In the wake of directions of the Hon'ble Supreme Court in the Interlocutory Application No. 22 in Writ Petition (C) No. 4677 of 1985, 168 industries listed as hazardous/noxious/ heavy/large industries are to be closed down on the mid night of 30th November, 1996. Subsequently by another order, the Hon'ble Supreme Court has directed a further 513 units to be closed w.e.f. 31.1.1997. In the order dated 8.7.96 the National Capital Regional Planning Board has been directed to render all assistance to the industries for the purpose of relocation outside Delhi. The Hon'ble Supreme Court has also given certain directions regarding the amount of compensation to be paid to the affected workmen. The Hon'ble Supreme Court has also given directions that the workmen employed in the industries which fail to relocate and the workmen who are not willing to shift alongwith the re-located industries shall be deemed to have been retrenched with effect from 30th November, 1996 provided they have been in continuous service for not less than one year in the industries concerned before the said date. Besides the compensation payable under Section 25 F(b) of the Industrial Disputes Act, such workmen will also be given one year's wages as additional compensation.

2. According to the information received from the Government of NCT of Delhi the industries have so far not shown any inclination for re-location. The trade unions have also expressed apprehension that the industries are more interested in selling part of the land and utilise the money so received for pur-